वर्ष-26 अंक-03 जुलाई - सितंबर 2025

संपर्क सरिता

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल की त्रैमासिक पत्रिका

संपादक-मंडल

निदेशक
प्रो. सी.सी. त्रिपाठी

संपादक
प्रो. पी.के. पुरोहित

सह-संपादक
श्रीमती बबली चतुर्वेदी

डिज़ाइन
श्री जितेन्द्र चतुर्वेदी

छायांकन
श्री रितेन्द्र पवार

Deemed to be University under Distinct Category

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल
(समविश्वविद्यालय, विशिष्ट श्रेणी अंतर्गत)
शिक्षा मंत्रालय,
भारत सरकार,
शामला हिल्स,
भोपाल 462002,
(म.प्र.) भारत

सोशल मीडिया लिंक
twitter.com/nitttrbpl
faceboo.com/nitttrbhopalofficial
instagram.com/nitttrbhopal

"भारतीय ज्ञान परम्परा एक वैज्ञानिक दृष्टि" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

भारतीय ज्ञान परम्परा से जुड़ा कार्य एक साधना है :-डॉ शिवकुमार शर्मा

राष्ट्रीय कार्यशाला 'राजभाषा संवाद 2025' का आयोजन

राजभाषा नीति का कार्यान्वयन हमारा नैतिक दायित्व है: श्री देवी प्रसाद मिश्र

भारतीय ज्ञान एक जीवंत बौद्धिक परंपरा है: प्रो. सी.सी. त्रिपाठी

देशभर के संस्थानों को पीछे छोड़ते हुए NITTTR भोपाल को HEI अभियान में मिला प्रथम स्थान

उपलब्धि | एचईआई अभियान में मिला प्रथम स्थान, केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ने जारी की रिपोर्ट

सोशल मीडिया पर छाया निटर भोपाल

भोपाल, 27 अगस्त. राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (एनआईटीटीटीआर), भोपाल ने देश भर के प्रतिष्ठित उच्च शिक्षण संस्थानों की उपलब्धियों को उजागर करने वाले HEI Success Stories अभियान में अपनी प्रभावशाली डिजिटल उपस्थिति और उत्कृष्ट कार्यों के बल पर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए देशभर में शीर्ष स्थान प्राप्त किया है.

यह रिपोर्ट शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार ने हाल ही में जारी की है. 18 नवम्बर 2024 से 13 मई 2025 तक चले इस राष्ट्रव्यापी अभियान के तहत कुल 58 पोस्ट्स विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे एक्स (पूर्व में ट्विटर), फेसबुक और इंस्टाग्राम पर साझा की गईं. इस अभियान में निटर भोपाल को अपने योगदान और गतिविधियों के लिए 2,39,100 इम्प्रेशंस प्राप्त हुए, जिससे वह सभी संस्थानों में शीर्ष स्थान पर रहा. इसके बाद क्रमशः आईआईटी खड़गपुर (2,32,800), केंद्रीय विश्वविद्यालय तमिलनाडु (2,24,200), आईआईएम अहमदाबाद (1,88,000) और केंद्रीय विश्वविद्यालय कश्मीर (1,72,100) का स्थान रहा.

हायर एजुकेशन इंस्टीटूशन्स की सक्सेस स्टोरीज अभियान का उद्देश्य देश के उच्च शिक्षण संस्थानों की सक्सेस स्टोरीज को सामने लाकर उनके श्रेष्ठ अनुभवों, नवाचारों और उपलब्धियों को राष्ट्[...] साझा करना था. इस [...] उपलब्धि पर संस्थान [...] प्रो. सी. सी. त्रिपाठी [...] इस उपलब्धि ने यह [...] दिया है कि निटर [...] केवल तकनीकी [...] प्रशिक्षण के क्षेत्र में [...] संस्था है, बल्कि व[...] तकनीकी शिक्षा [...] नवाचार, गुणवत्ता औ[...] सशक्त प्रतीक बन [...]

संस्थान के डीन एवं पीआरओ प्रो. पी.के. पुरोहित ने [...] उपलब्धि इस बात का भी प्रमाण है कि हमारी गतिविधियाँ [...] और शैक्षणिक समुदाय के बीच सार्थक रूप से पहुँच रही है. [...] हमारे पूरे संस्थान की सामूहिक प्रतिबद्धता और उत्कृष्टता की [...] इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर संस्थान के निदेशक प्रो. त्रिपाठी [...] के मीडिया प्रकोष्ठ के सदस्यों प्रो. पुरोहित, जीतेन्द्र चतु[...] त्रिपाठी एवं बबली चतुर्वेदी को उनके प्रयासों के लिए बधाई दी[...]

"भारतीय ज्ञान परम्परा एक वैज्ञानिक दृष्टि" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

भारतीय ज्ञान परम्परा से जुड़ा कार्य एक साधना है :- डॉ शिवकुमार शर्मा

संस्थान में उच्च शिक्षा विभाग मध्य प्रदेश एवं देश भर से आने वाले शासकीय महाविधालयों में पदस्थ प्राध्यापकों हेतु चल रहे प्रशिक्षण कार्यक्रम में दिनांक 18 जुलाई 2025 "भारतीय ज्ञान परम्परा एक वैज्ञानिक दृष्टि "विषय पर विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्या वक्ता डॉ. शिव कुमार शर्मा राष्ट्रीय संगठन सचिव, विज्ञान भारती ने भारतीय ज्ञान परम्परा के विविध आयामो पर चर्चा करते हुए कहा की धर्म, दर्शन, विज्ञान, चिकित्सा, वास्तुशास्त्र एवं धातुकर्म, ज्योतिष, खगोल, स्थापत्य कला, नृत्य कला, संगीत कला, आदि सभी तरह के ज्ञान का जन्म भारत में हुआ है ऐसा कहने में कोई गुरेज नही, क्योंकि इसके हजारों प्रमाण हैं। आधुनिक युग के ऐसे बहुत से अविष्कार हैं, जो भारतीय शोधों के निष्कर्षों पर आधारित हैं। शिक्षक का स्थान भारतीय संस्कृति मे सर्वोत्तम है। भारतीय ज्ञान परम्परा से जुड़ा कार्य एक साधना है। संस्थान के निदेशक डॉ सी सी त्रिपाठी ने कहा कि हमारे संस्थान में भारतीय ज्ञान परंपरा विभाग की स्थापना की गयी है जिसका उद्देश्य भारतीय शैक्षिक, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक और सामाजिक धरोहर को पुनः जीवित कर वैज्ञानिक तथ्यों के साथ समकालीन रूप से प्रासंगिक बनाना है। इस प्रकार के आयोजन संस्थान को न केवल तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में समृद्ध करते हैं, बल्कि मूल्य-आधारित, समग्र एवं भारतीय दृष्टिकोण युक्त शिक्षा की दिशा में प्रेरित करते हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनः स्थापित करना हमारी साझा जिम्मेदारी है। अधिष्ठाता विज्ञान एवं विभागाध्यक्ष आईकेएस प्रो पी के पुरोहित ने कहा कि संस्थान उच्च शिक्षा विभाग मध्य प्रदेश एवं देश भर के शिक्षकों के लिए भारतीय ज्ञान परम्परा पर आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रमों की श्रृंखला आयोजित कर रहा है, यह विचारशील प्रयास भारत के आत्मबोध और गौरवशाली परंपरा को पुनः जगाने का एक सांस्कृतिक आह्वान है। इस कार्यक्रम में श्री विवेक आनंद- महासचिव विज्ञान भारती, देशभर के शिक्षक, विभिन्न संस्थानों के प्रतिनिधि सहित शोधार्थी सम्मिलित थे।कार्यक्रम का संचालन श्रीमती शोभा लेखवानी ने किया।

देशभर के संस्थानों को पीछे छोड़ते हुए NITTTR भोपाल को HEI अभियान में मिला प्रथम स्थान

देश भर के प्रतिष्ठित उच्च शिक्षण संस्थानों की उपलब्धियों को उजागर करने वाले "HEI Success Stories" अभियान में संस्थान ने अपनी प्रभावशाली डिजिटल मौजूदगी और उत्कृष्ट कार्यों के बल पर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए शीर्ष स्थान प्राप्त किया है। 18 नवम्बर 2024 से 13 मई 2025 तक चले इस राष्ट्रव्यापी अभियान के तहत कुल 58 पोस्ट्स विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे X (पूर्व में ट्विटर), फेसबुक और इंस्टाग्राम पर साझा की गई। इस पूरी श्रृंखला को मिलाकर लगभग 70 लाख डिजिटल इम्प्रेशंस प्राप्त हुए — जो उच्च शिक्षा क्षेत्र में जनता की भागीदारी और रुचि को दर्शाता है। इस अभियान में संस्थान ने अपने योगदान और गतिविधियों को इस तरह प्रस्तुत किया कि उसे अकेले 2,39,100 इम्प्रेशंस प्राप्त हुए, जिससे वह सभी संस्थानों में शीर्ष स्थान पर रहा। इसके बाद क्रमशः आईआईटी खड़गपुर (2,32,800), केंद्रीय विश्वविद्यालय तमिलनाडु (2,24,200), आईआईएम अहमदाबाद (1,88,000) और केंद्रीय विश्वविद्यालय कश्मीर (1,72,100) का स्थान रहा। इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर संस्थान के निदेशक प्रो. सी. सी. त्रिपाठी ने संस्थान के मीडिया प्रकोष्ठ को उनके प्रयासों के लिए बधाई दी।

संस्थान के डीन, कॉर्पोरेट एंड इंटरनेशनल रिलेशन्स प्रो. पी.के. पुरोहित ने अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि यह उपलब्धि न केवल हमारे संस्थान के तकनीकी शिक्षा और शिक्षक प्रशिक्षण क्षेत्र में किए गए प्रयासों का प्रमाण है, बल्कि यह इस बात का भी प्रमाण है कि हमारी गतिविधियाँ आम जनता और शैक्षणिक समुदाय के बीच सार्थक रूप से पहुँच रही हैं। यह सफलता हमारे फैकल्टी, कर्मचारी, छात्र और पूरे संस्थान की सामूहिक प्रतिबद्धता और उत्कृष्टता की परिणति है। "HEI Success Stories" अभियान का उद्देश्य था देश के उच्च शिक्षण संस्थानों की प्रेरणादायक कहानियों को सामने लाकर उनके श्रेष्ठ अनुभवों, नवाचारों और उपलब्धियों को राष्ट्रीय स्तर पर साझा करना, जिससे अन्य संस्थान भी उनसे सीखकर शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार कर सकें। इस उपलब्धि ने यह सिद्ध कर दिया है कि संस्थान, न केवल तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण में एक अग्रणी संस्थान है, बल्कि वह भारत में तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार, गुणवत्ता और नेतृत्व का सशक्त प्रतीक बन चुका है।

शिक्षा मंत्रालय ने जारी की रिपोर्ट

हायर एजुकेशन सक्सेस स्टोरी में NITTTR देशभर में नंबर वन

भोपाल| राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (एनआईटीटीटीआर) भोपाल ने केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय के 'हायर एजुकेशनल इंस्टीट्यूट सक्सेज स्टोरी' अभियान में देशभर के प्रतिष्ठित संस्थानों को पीछे छोड़ते हुए पहला स्थान हासिल किया है। 18 नवम्बर 2024 से 13 मई 2025 तक चले इस अभियान में उपलब्धियों और गतिविधियों को सोशल मीडिया पर साझा किया गया। इस दौरान 58 पोस्ट्स के जरिए करीब 70 लाख डिजिटल इम्प्रेशंस दर्ज हुए। इसमें एनआईटीटीटीआर भोपाल को सबसे अधिक 2,39,100 इम्प्रेशंस मिले। इसके बाद आईआईटी खड़गपुर, केंद्रीय विश्वविद्यालय तमिलनाडु, आईआईएम अहमदाबाद और केंद्रीय विश्वविद्यालय कश्मीर का स्थान रहा। 'आप अपने संस्थान को जानें' श्रेणी में आईआईटी मंडी पहले स्थान पर रहा। निदेशक प्रो. सीसी त्रिपाठी ने मीडिया प्रकोष्ठ को बधाई दी, वहीं डीन प्रो. पीके पुरोहित ने कहा कि यह उपलब्धि बताती है कि संस्थान

उपलब्धि | **एचईआई अभियान में मिला प्रथम स्थान, केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ने जारी की रिपोर्ट**

सोशल मीडिया पर छाया निटर भोपाल

भोपाल, 27 अगस्त. राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (एनआईटीटीटीआर), भोपाल ने देश भर के प्रतिष्ठित उच्च शिक्षण संस्थानों की उपलब्धियों को उजागर करने वाले HEI Success Stories अभियान में अपनी प्रभावशाली डिजिटल उपस्थिति और उत्कृष्ट कार्यों के बल पर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए देशभर में शीर्ष स्थान प्राप्त किया है.

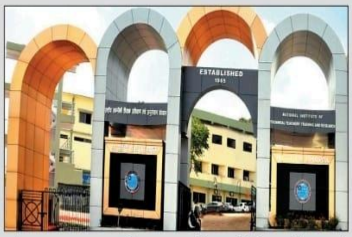

यह रिपोर्ट शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार ने हाल ही में जारी की है. 18 नवम्बर 2024 से 13 मई 2025 तक चले इस राष्ट्रव्यापी अभियान के तहत कुल 58 पोस्ट्स विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे एक्स (पूर्व में ट्विटर), फेसबुक और इंस्टाग्राम पर साझा की गईं. इस अभियान में निटर भोपाल को अपने योगदान और गतिविधियों के लिए 2,39,100 इम्प्रेशंस प्राप्त हुए, जिससे वह सभी संस्थानों में शीर्ष स्थान पर रहा. इसके बाद क्रमशः आईआईटी खड़गपुर (2,32,800), केंद्रीय विश्वविद्यालय तमिलनाडु (2,24,200), आईआईएम अहमदाबाद (1,88,000) और केंद्रीय विश्वविद्यालय कश्मीर (1,72,100) का स्थान रहा.

हायर एजुकेशन इंस्टीटूशन्स की सक्सेस स्टोरीज अभियान का उद्देश्य देश के उच्च शिक्षण संस्थानों की सक्सेस स्टोरीज को सामने लाकर उनके श्रेष्ठ अनुभवों, नवाचारों और उपलब्धियों को राष्ट्रीय स्तर पर साझा करना था. इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर संस्थान के निदेशक प्रो. सी. सी. त्रिपाठी ने कहा की इस उपलब्धि ने यह सिद्ध कर दिया है कि निटर भोपाल, न केवल तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण के क्षेत्र में एक अग्रणी संस्था है, बल्कि वह भारत में तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार, गुणवत्ता और नेतृत्व का सशक्त प्रतीक बन चुका है.

संस्थान के डीन एवं पीआरओ प्रो. पी.के. पुरोहित ने कहा कि यह उपलब्धि इस बात का भी प्रमाण है कि हमारी गतिविधियाँ आम जनता और शैक्षणिक समुदाय के बीच सार्थक रूप से पहुँच रही है. यह सफलता हमारे पूरे संस्थान की सामूहिक प्रतिबद्धता और उत्कृष्टता की परिणति है. इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर संस्थान के निदेशक प्रो. त्रिपाठी ने संस्थान के मीडिया प्रकोष्ठ के सदस्यों प्रो. पुरोहित, जीतेन्द्र चतुर्वेदी, संजय त्रिपाठी एवं बबली चतुर्वेदी को उनके प्रयासों के लिए बधाई दी.

भारतीय ज्ञान एक जीवंत बौद्धिक परंपरा है: प्रो. सी.सी. त्रिपाठी

संस्थान में दिनांक 06 अगस्त 2025 को “भारतीय ज्ञान परंपरा” विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस व्याख्यान के मुख्य वक्ता डॉ. अवनीश भटनागर, अखिल भारतीय उपाधयक्ष, विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान थे। इस अवसर पर डॉ. अवनीश भटनागर ने कहा कि हमारे देश की सभी परम्पराएं वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है। इन तथ्यों की वैज्ञानिक व्याख्या और प्रयोग आधारित परंपरा के हजारों प्रमाण हमारे ग्रंथों ऐतिहासिक अवशेषों में उपलब्ध हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा एक निरंतरता है, इसके वैज्ञानिक पहलुयों को समझे एवं जीवन व्यवहार में लाये, तभी इसके उद्देश्य की पूर्ति हो सकती है। केवल पुस्तकों को पढ़कर स्टूडेंट्स को पढ़ाने से भारतीय ज्ञान परंपरा का उद्देश्य पूर्ण नहीं होगा। भारतीय चिंतन में प्रकृति को पूजने का विधान रहा है। संस्थान के निदेशक डॉ. सी.सी त्रिपाठी ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा केवल इतिहास नहीं, बल्कि एक जीवंत बौद्धिक परंपरा है, जिसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ पुनः समाज के केंद्र में लाना समय की आवश्यकता है। हमारा उद्देश्य तकनीकी दक्षता के साथ-साथ सांस्कृतिक चेतना और भारतीय वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समावेश करना है, जिससे शिक्षा अधिक सार्थक एवं समाजोपयोगी बन सके। अधिष्ठाता विज्ञान एवं विभागाध्यक्ष आईकेएस प्रो. पी.के पुरोहित ने सत्र में आभार ज्ञापन मेंकहा कि यहाँ उपस्थित सभी शिक्षक भारतीय ज्ञान के प्रसारक ही नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक पुनरुत्थान के वाहक भी हैं। भारतीय शिक्षा परंपरा में ज्ञान को आत्मा का प्रकाश कहा गया है। यह प्रकाश तभी व्यापक होगा जब शिक्षक स्वयं उस परंपरा से गहराई से जुड़कर उसे वैज्ञानिक संदर्भों में विद्यार्थियों तक पहुँचाएँ। इस कार्यक्रम में उच्च शिक्षा विभाग, मध्य प्रदेश तथा देश भर के शासकीय महाविद्यालयों में पदस्थ प्राध्यापकों ने भाग लिया।

“संविधान हत्या वर्ष” पर विशेषज्ञ व्याख्यान आयोजित

आपातकाल का घाव सदियों तक रहेगा— डॉ. अशोक कडेल

संविधान और लोकतंत्र की संरचना को चुनौती देने वाले ऐतिहासिक क्षणों का पुनः मंथन करने के उद्देश्य से संस्थान में “संविधान हत्या वर्ष” विषय पर मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी के निदेशक डॉ. अशोक कडेल का विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। इस अवसर पर डॉ. कडेल ने भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में एक काले अध्याय, आपातकाल (1975-1977) की घटनाओं पर प्रकाश डाला, और इसे संविधान की हत्या के रूप में चित्रित किया। डॉ. कडेल ने आपातकाल के समय के अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि कैसे उस समय संविधान की हत्या की गयी एवं कई बार संशोधन किये गए जिन पर विचार आवश्यक है। डॉ. काडेल ने संविधान के सामने अतीत और वर्तमान में उत्पन्न चुनौतियों, संवैधानिक उल्लंघनों के उदाहरणों, तथा शिक्षकों और बुद्धिजीवियों की भूमिका पर विस्तार से चर्चा की और बताया कि यह फैसला तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने लिया था और इसी के साथ आजाद भारत के लोग सरकार के गुलाम बनकर रह गए थे। आम लोगों की स्वतंत्रता समाप्त कर दी गई थी और 21 महीनों तक विपक्ष के सभी नेता जेल में बंद कर दिए गए थे तथा कैसे उन्हें निर्दोष होते हए भी जेल में बंद कर यातनाये दी गयी थी। उन्होंने प्रतिभागियों से आह्वान किया कि वे विद्यार्थियों और समाज में संवैधानिक जागरूकता को बढ़ावा दें। संस्थान के निदेशक डॉ. सी. सी. त्रिपाठी ने कहा कि “संविधान हत्या वर्ष” का उद्देश्य ऐसे कृत्यों या संशोधनों पर प्रकाश डालना है जिन्हें संविधान के मूल सिद्धांतों और उसकी आत्मा के विपरीत माना जाता है। ऐसे कृत्यों ने भारतीय संविधान की शक्ति और पवित्रता को गंभीर रूप से कमजोर किया, और यह इतिहास का एक ऐसा काला अध्याय था जिसे भूल पाना आसान नहीं होगा। इस तरह के आयोजनों का उद्देश्य संविधान की पवित्रता, लोकतांत्रिक मूल्यों और नागरिक अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। यह दिवस नागरिकों को लोकतंत्र की रक्षा के लिए सजग रहने और संवैधानिक आदर्शों को बनाए रखने का संदेश देता है। संविधान को सिर्फ एक कानून नहीं, बल्कि एक जीती-जागती भावना के रूप में देखना चाहिए, जो भारतीय समाज के प्रत्येक नागरिक के जीवन का अभिन्न हिस्सा है। इस कार्यक्रम में संस्थान के संकाय सदस्यों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं शोधार्थियों ने भाग लिया।

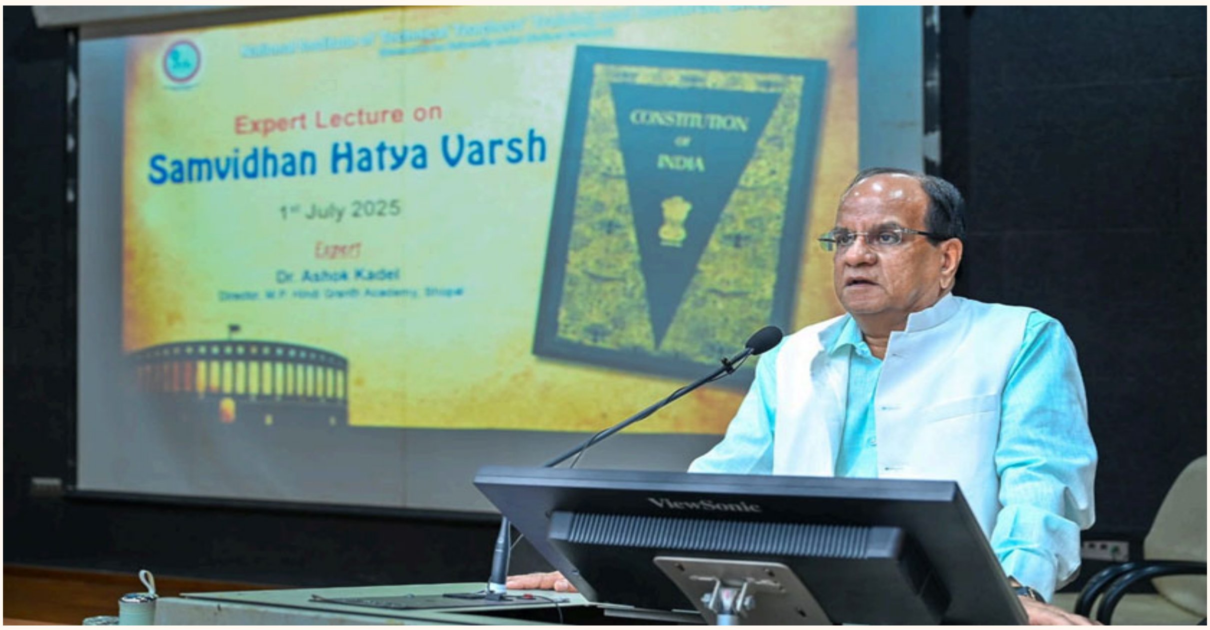

भारतीय परम्पराएं वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है: डॉ. शिवकुमार शर्मा

संस्थान में "भारतीय ज्ञान परंपरा" विषय पर दिनांक 04 अगस्त 2025 को विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस व्याख्यान के मुख्य वक्ता डॉ. शिव कुमार शर्मा, राष्ट्रीय संगठन सचिव, विज्ञान भारती थे। इस अवसर पर डॉ. शिव कुमार शर्मा ने कहा कि हमारे देश की सभी परम्पराएं वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है। इन तथ्यों की वैज्ञानिक व्याख्या और प्रयोग आधारित परंपरा के हजारों प्रमाण हमारे ग्रंथों ऐतिहासिक अवशेषों में उपलब्ध हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा एक निरंतरता है, इसके वैज्ञानिक पहलुयों को समझे एवं जीवन व्यवहार में लाये, तभी इसके उद्देश्य की पूर्ति हो सकती है। केवल पुस्तकों को पढ़कर स्टूडेंट्स को पढ़ाने से भारतीय ज्ञान परंपरा का उद्देश्य पूर्ण नहीं होगा। भारतीय चिंतन में प्रकृति को पूजने का विधान रहा है। संस्थान के निदेशक डॉ. सी.सी त्रिपाठी ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा केवल इतिहास नहीं, बल्कि एक जीवंत बौद्धिक परंपरा है, जिसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ पुनः समाज के केंद्र में लाना समय की आवश्यकता है। हमारा उद्देश्य तकनीकी दक्षता के साथ-साथ सांस्कृतिक चेतना और भारतीय वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समावेश करना है, जिससे शिक्षा अधिक सार्थक एवं समाजोपयोगी बन सके। अधिष्ठाता विज्ञान एवं विभागाध्यक्ष आईकेएस प्रो. पी.के पुरोहित ने कहा कि यहाँ उपस्थित सभी शिक्षक भारतीय ज्ञान के प्रसारक ही नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक पुनरुत्थान के वाहक भी हैं। भारतीय शिक्षा परंपरा में ज्ञान को आत्मा का प्रकाश कहा गया है। यह प्रकाश तभी व्यापक होगा जब शिक्षक स्वयं उस परंपरा से गहराई से जुड़कर उसे वैज्ञानिक संदर्भों में विद्यार्थियों तक पहुँचाएँ। इस कार्यक्रम में उच्च शिक्षा विभाग, मध्य प्रदेश तथा देश भर के शासकीय महाविद्यालयों में पदस्थ प्राध्यापकों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती बबली चतुर्वेदी द्वारा किया गया।

संस्थान में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए स्वदेशी शक्ति पर राष्ट्रीय कार्यक्रम का आयोजन

स्वदेशी सुरक्षा एवं स्वावलंबन अभियान के अंतर्गत संस्थान तथा स्वदेशी जागरण मंच के संयुक्त तत्वावधान में "अखिल भारतीय महिला–शोध, प्रशिक्षण एवं विचार वर्ग" का आयोजन 30 एवं 31 अगस्त 2025 को किया गया। इस वर्ग का उद्देश्य देश में मातृशक्ति की सक्रिय भूमिका को प्रोत्साहन देना और स्वदेशी कार्यों की दिशा को स्पष्ट करना था। स्वदेशी कार्यरत बहनों का इसमें स्वागत किया गया। देशभर से 175 से ज्यादा प्रतिभागी शामिल हुए। यह कार्यक्रम महिला उद्यमियों, शोधकर्ताओं एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं को सशक्त बनाने के उद्देश्य से आयोजित किया गया था, जिसमें प्रशिक्षण, कार्यशालाओं और संवाद सत्रों के माध्यम से ज्ञान व उद्यमिता कौशल का विकास किया गया। यह कार्यक्रम न केवल महिला सशक्तिकरण और लैंगिक समानता की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है, बल्कि स्वदेशी उत्पादों, आत्मनिर्भरता और स्थानीय अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित करने के एनआईटीटीटीआर के दृष्टिकोण को भी सशक्त करता है। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती निर्मला भूरिया (महिला एवं बाल विकास मंत्री, म.प्र.) उपस्थित रही। कार्यक्रम में श्री सतीश कुमार (राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री, स्वदेशी जागरण मंच), श्रीमती मालती रॉय (महापौर, भोपाल), प्रो. चंद्र चारु त्रिपाठी (निदेशक, एनआईटीटीटीआर, भोपाल) और अर्चना मीना (अखिल भारतीय महिला प्रमुख, स्वदेशी जागरण मंच) भी सम्मिलित हुई। समापन सत्र में श्रीमती कृष्णा गौर (राज्य मंत्री, म.प्र.), श्रीमती वीरा राणा (पूर्व मुख्य सचिव, म.प्र.), श्री कश्मीरी लाल (राष्ट्रीय संगठक, स्वदेशी जागरण मंच) और श्री जितेन्द्र गुप्त (अखिल भारतीय सह संयोजक, स्वावलंबी भारत अभियान) डॉ. प्रतिभा चतुर्वेदी (अखिल भारतीय सह प्रमुख, स्वावलंबी भारत अभियान) सम्मिलित रहे। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ पल्लवी भटनागर थी।

जो मूल है वही बहुमूल्य है: डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी

ज्ञान वैश्विक हो सकता है लेकिन शिक्षा राष्ट्र के अनुरूप ही होना चाहिए: डॉ. अवनीश भटनागर

सही आचरण ही समाज को संगठित रखेगा: डॉ. उत्तम द्विवेदी

संस्थान में दिनांक 01 सितम्बर 2025 उच्च शिक्षा विभाग मध्य प्रदेश के शासकीय महाविद्यालयों में पदस्थ प्राध्यापकों हेतु भारतीय ज्ञान परम्परा पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस व्याख्यान के मुख्य वक्ता डॉ. अवनीश भटनागर, डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी एवं डॉ. उत्तम द्विवेदी थे। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री अवनीश भटनागर ने भारतीय शिक्षा दर्शन की अवधारणा को विस्तार से प्रस्तुत करते हुए बताया कि शिक्षा केवल सूचना देना नहीं, बल्कि एक समग्र व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया है। श्री भटनागर ने शिक्षकों को 'टीचिंग के मूलमंत्र' भी दिए और कहा कि शिक्षक का उद्देश्य केवल पढ़ाना नहीं, बल्कि जीवन मूल्यों का संवाहक बनना होना चाहिए। दूसरे वक्त प्रो. ललित बिहारी गोस्वामी ने कहा कि जो मूल है वही बहुमूल्य है। भारत में ज्ञान के प्रति अनुराग या साक्षात्कार की विशेषता हमेशा से रही है। ज्ञान अहंकार दे सकता हे लेकिन विद्या विनय देती हे। उन्होंने कहा कि शिक्षक क्लास में शंका लेकर नहीं जिज्ञासा लेकर जाएँ। प्रो. उत्तम द्विवेदी ने कहा कि सही आचरण ही समाज को संगठित रखेगा। शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यावसायिक दक्षता नहीं, बल्कि चरित्र और मूल्यों की स्थापना भी है। अब समय आ गया है कि हम अपने स्वर्णिम अतीत की जड़ों को पुनः भारतीय जीवन मूल्यों से सिंचित करें और भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने का संकल्प लें। संस्थान के निदेशक डॉ. सी.सी त्रिपाठी ने कहा कि भारतीय दृष्टिकोण युक्त, मूल्य-आधारित एवं समग्र शिक्षा को वैज्ञानिक तथ्यों के साथ समकालीन रूप से प्रासंगिक बनाना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। अधिष्ठाता विज्ञान एवं विभागाध्यक्ष आईकेएस प्रो. पी.के पुरोहित ने कहा कि यह पहल न केवल भारत की समृद्ध धरोहर को पुनर्स्थापित करने का प्रयास है, बल्कि राष्ट्रगौरव को जागृत करने का एक सशक्त सांस्कृतिक संदेश भी है। कार्यक्रम का संचालन श्री संजय त्रिपाठी ने किया।

शोध, रोजगार और नवाचार की नई पहल:

संस्थान और आईआईएसईआर के बीच एमओयू

संस्थान और भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (आईआईएसईआर), भोपाल ने सेमीकंडक्टर स्किलिंग और अनुसंधान के क्षेत्र में सहयोग के लिए एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। इस एमओयू पर संस्थान के निदेशक प्रो. सी. सी. त्रिपाठी और आईआईएसईआर भोपाल के निदेशक प्रो. गोबर्धन दास ने औपचारिक रूप से हस्ताक्षर किए। समझौते का उद्देश्य अनुसंधान, नवाचार, कौशल विकास और संयुक्त प्रयासों के माध्यम से देश को तकनीकी रूप से और सशक्त बनाना है। संस्थान के निदेशक प्रो. त्रिपाठी ने इस अवसर पर कहा कि दोनों संस्थान मिलकर सेमीकंडक्टर डिवाइस की असेंबली और पैकेजिंग के क्षेत्र में कार्य करेंगे। उन्होंने कहा कि एक समय सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में भारत आयात पर निर्भर था, लेकिन आज स्थिति बदल चुकी है और पूरा विश्व इस क्षेत्र में भारत की ओर उम्मीदों के साथ देख रहा है। आईआईएसईआर भोपाल के निदेशक प्रो. गोबर्धन दास ने इस साझेदारी को देश की शोध प्राथमिकताओं से जोड़ते हुए कहा कि आज अनुसंधान की सार्थकता तभी है जब यह राष्ट्र की वास्तविक आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं पर आधारित हो। एकेडेमिक संस्थानों का मूल उद्देश्य तभी पूरा होता है जब वे अपने विद्यार्थियों को आवश्यक दक्षताओं से लैस करके उन्हें रोजगार योग्य बनाएं। यह समझौता संयुक्त अनुसंधान और विकास को गति देगा जिससे कम समय में बेहतर परिणाम हासिल होंगे। इससे नई पीढ़ी के सेमीकंडक्टर पेशेवर तैयार होंगे जिनकी मांग इंडस्ट्री में लगातार बढ़ रही है। सेमीकंडक्टर उद्योग में भारत में अगले दशक में लाखों कुशल और अर्ध-कुशल रोजगार सृजित होने की उम्मीद है, जिससे यह क्षेत्र रोजगार के लिए एक बड़ा स्रोत बनेगा। इस अवसर पर संस्थान से प्रो. पी.के पुरोहित, प्रो. पी. के खन्ना, प्रो. रमेश गुप्ता, प्रो. सीमा वर्मा, प्रो. पल्लवी भटनागर एवं आईआईएसईआर, भोपाल के डॉ. चन्दन साही, प्रो. शांतनु तालुकदार एवं अन्य फैकल्टी मेंबर्स भी उपस्थित थे।

संस्थान में शिक्षक दिवस के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित

संस्थान में शिक्षक दिवस के अवसर संस्थान के शिक्षकों हेतु सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में निदेशक प्रो. सी. सी त्रिपाठी ने सभी को शिक्षक दिवस की शुभकामनाएँ दीं एवं संस्थान के सतत विकास में सभी के सहयोग की सराहना की। उन्होंने कहा कि शिक्षक समाज की रीढ़ होते हैं, और शिक्षक की निष्ठा, कर्मठता एवं मार्गदर्शन ही विद्यार्थियों को न केवल सफलता की ओर ले जाता है, बल्कि उन्हें एक बेहतर नागरिक और मानव भी बनाता है। कार्यक्रम में संस्थान के सभी कर्मचारियों द्वारा समस्त शिक्षकगण को पुष्पगुच्छ एवं स्मृति-चिह्न भेंट कर उनका सम्मान किया गया। समारोह में वक्ताओं ने डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जीवन और उनके शैक्षिक दृष्टिकोण पर भी प्रकाश डाला, जिनकी स्मृति में यह दिवस मनाया जाता है व शिक्षकों ने भी अपने अनुभव साझा किये।

संस्थान में ओरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित

सिर्फ डिग्री नहीं, खुद के कौशल को भी निखारें: डॉ. अवनीश भटनागर

सम-विश्वविद्यालय का दर्जा मिलने के बाद संस्थान में प्रारम्भ हुए पीएचडी, एमटेक, एमएससी प्रारम्भ हुए है। संस्थान द्वारा नए विद्यार्थियों के लिए एक विशेष ओरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक प्रो. सी.सी. त्रिपाठी और मुख्य अतिथि वरिष्ट शिक्षाविद एवं अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान विद्याभारती के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री अवनीश भटनागर ने विद्यार्थियों से संवाद किया और उन्हें शैक्षिक यात्रा के दौरान महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान किया। श्री अवनीश भटनागर ने विद्यार्थियों को स्व-रोज़गार के अवसरों के बारे में बताते हुए कहा कि वे केवल डिग्री प्राप्त करने के साथ-साथ अपने उद्यमिता कौशल को भी विकसित करें। उन्होंने विद्यार्थियों से आग्रह किया कि वे शैक्षिक जीवन के साथ-साथ अपने व्यावसायिक और व्यक्तिगत कौशल को भी बढ़ावा दें। संस्थान निदेशक प्रो. सी.सी. त्रिपाठी ने कहा, "आज के समय में केवल अहर्ता की ही नहीं, बल्कि दक्षता की भी आवश्यकता है। निटर का पाठ्यक्रम न केवल विद्यार्थियों के लिए, बल्कि समुदाय के लिए भी सहायक होगा। संस्थान का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करना नहीं है, बल्कि उन्हें स्वावलंबी और समाज में योगदान देने योग्य व्यक्तित्व के रूप में तैयार करना है। डीन एकेडमिक प्रो. संजय अग्रवाल ने कहा कि इस ओरिएंटेशन कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को संस्थान की नीति, अनुसंधान प्रक्रिया, उपलब्ध सुविधाओं और संसाधनों से परिचित कराना था। इस ओरिएंटेशन कार्यक्रम के माध्यम से नए विद्यार्थियों को एक स्पष्ट दिशा और प्रेरणा प्राप्त हुई, जो उनकी शैक्षिक यात्रा को और भी सफल बनाएगी। कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों को संस्थान की लाइब्रेरी, सेंटर ऑफ एक्सीलेंस की प्रयोगशाला और शोध केंद्रों का भ्रमण कराया गया, ताकि वे संस्थान के अत्याधुनिक शैक्षिक और शोध कार्यों को समझ सकें। संस्थान के प्रत्येक विभाग एवं केंद्र ने अपने-अपने शैक्षणिक कार्यक्रमों एवं हाई-टेक लैब्स के बारे में विद्यार्थियों को विस्तृत जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर संस्थान के अधिष्ठाता प्रो. आर. के. दीक्षित, प्रो. मनीष भार्गव, प्रो. एस.एस केदार एवं अन्य फैकल्टी मेंबर्स भी उपस्थित थे।

संस्थान और जबलपुर इंजीनियरिंग कॉलेज, मध्य प्रदेश के बीच एमओयू

संयुक्त प्रयासों से तकनीकी संस्थान वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बन सकते हैं – प्रो. सी. सी. त्रिपाठी

संस्थान और जबलपुर इंजीनियरिंग कॉलेज, मध्य प्रदेश के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर हुए। इस समझौते का उद्देश्य तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में संयुक्त अनुसंधान, प्रशिक्षण, अकादमिक सहयोग, नवाचार, एवं विभिन्न तकनीकी पहलुओं को बढ़ावा देना है, जिससे दोनों संस्थानों के कर्मचारियों, शिक्षकों और विद्यार्थियों को नए अवसर प्राप्त होंगे।। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रो. सी. सी त्रिपाठी ने कहा कि स्किल डेवलपमेंट के लिए प्रोसेस पर फोकस करना आवशयक है। विद्यार्थियों के भरोसे पर खरा उतरना तकनीकी संस्थानों की जिम्मेदारी है। एनईपी-2020 के अनुरूप यह सहयोग संस्थानों को डिजिटलाइजेशन, इंडस्ट्री 4.0, ग्रीन ट्रांजिशन एवं स्किल डेवलपमेंट जैसे क्षेत्रों में काम करने का अवसर प्रदान करेगा। जबलपुर इंजीनियरिंग कॉलेज के प्राचार्य प्रो. राजीव चांडक ने कहा कि जबलपुर इंजीनियरिंग कॉलेज, मध्य प्रदेश का सबसे पुराना एवं प्रतिष्ठित शासकीय इंजीनियरिंग संस्थान है, जोकि वर्ष 1947 में स्थापित हुआ था, वर्तमान में संस्थान इमर्जिंग एरिया में भी कोर्सेज संचालित कर रहा है, जिसमें निटर भोपाल एक अहम भूमिका निभा सकता है। निटर भोपाल के सहयोग से हम अपने कॉलेज के पाठ्यक्रम को भी अपडेट करेंगे। निटर भोपाल के डीन कॉर्पोरेट एंड इंटरनेशनल रिलेशन्स प्रो. पी.के पुरोहित ने बताया कि दोनों संस्थानों के बीच फेकल्टी एक्सचेंज, इंटर्नशिप, और इंडस्ट्री इंटिग्रेटेड प्रोजेक्ट्स जैसी गतिविधियाँ आयोजित की जाएंगी। जबलपुर इंजीनियरिंग कॉलेज के प्राचार्य प्रो. राजीव चांडक, प्रो. पी. के झिंगे, प्रो. कमल कुमार कुशवाह, सहित वरिष्ठ सदस्यों के प्रतिनिधिमंडल ने एनआईटीटीटीआर के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस एवं सेमीकंडक्टर की प्रयोगशालाओं का भ्रमण किया। इस अवसर पर एनआईटीटीटीआर से प्रो. आर.के दीक्षित, प्रो. संजय अग्रवाल, प्रो. मनीष भार्गव, प्रो. हुसैन जीवाखान उपस्थित थे।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक संपन्न - राजभाषा हिंदी के प्रभावी प्रयोग पर चर्चा और प्रशिक्षण की योजनाएँ

उपसमितियों से होगा राजभाषा कार्यों में तेजी का संचार: श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा

संस्थान में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) क्र01 की वर्ष 2025 की प्रथम अर्धवार्षिक बैठक आयोजित की गई थी, जिसमें राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों ने भाग लिया। इस बैठक में राजभाषा विभाग के उपनिदेशक श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा द्वारा विगत छःमाह में की गई राजभाषा गतिविधियों पर चर्चा हुई एवं राजभाषा के प्रगामी प्रयोग हेतु महत्वपूर्ण निर्णय लिए गये। बैठक की अध्यक्षता करते हुए श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा ने नराकास की उपसमितियां बनाने की अनुशंसा की जिससे राजभाषा संबंधित कार्य कार्यालयों में और अधिक व्यवस्थित एवं सरलता से पूर्ण हो सकें। श्री मेहरा ने नराकास द्वारा श्रेष्ठ श्रेणी प्राप्त कार्यालयों को विशिष्ट प्रोत्साहन, वर्षभर राजभाषा कार्यशालाएं के लिए भी घोषणा की । आगामी अगस्त माह में उनके द्वारा तिमाही रिपोर्ट प्रारूप पर कार्यशाला व प्रशिक्षण देने की सहमति प्रदान की गई। संस्थान के निदेशक एवं नराकास के अध्यक्ष प्रो. सी. सी. त्रिपाठी ने सभी सदस्य कार्यालयों द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु किए जा रहे प्रयासों की सराहना की । उन्होंने कहा कि समीक्षा कमियों को उजागर करने नहीं अपितु बेहतर कार्य करने की प्रेरणा के लिए की जाती है। बैठक में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय के निदेशक प्रो. अमिताभ पांडे, संस्थान के राजभाषा आधिकारी मेजर निशांत ओझा, दूरदर्शन भोपाल से श्री आशीष पोटनीस, आईसार भोपाल श्री भारत भूषण देशमुख, सहित भोपाल के लगभग 55 नराकास के सदस्य कार्यालयों से लगभग 80 कार्यालय प्रमुख एवं राजभाषा अधिकारी शामिल हुए । कार्यक्रम का संचालन नराकास सचिव श्री संजय त्रिपाठी ने किया।

राष्ट्रीय कार्यशाला 'राजभाषा संवाद 2025' का आयोजन

सम्पूर्ण संस्कृति हिन्दी के साथ ही जीवित रह सकती है: डॉ. रवीन्द्र शुक्ल

राजभाषा नीति का कार्यान्वयन हमारा नैतिक दायित्व है: श्री देवी प्रसाद मिश्र

संस्थान द्वारा एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला "राजभाषा संवाद 2025" का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य राजभाषा हिंदी के संवर्धन, संसदीय प्रक्रिया में उसके उपयोग तथा वैश्विक पटल पर हिंदी की भूमिका पर मंथन करना था। मुख्य अतिथि डॉ. रवीन्द्र शुक्ल, पूर्व शिक्षा एवं कृषि मंत्री, उत्तर प्रदेश (अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष, हिंदी साहित्य भारती) ने अपने वक्तव्य में कहा कि सम्पूर्ण संस्कृति हिन्दी के साथ ही जीवित रह सकती है। उन्होंने कहा कि भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक पहचान, परंपराएं और जीवन मूल्यों की संवाहक है। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार केवल एक दायित्व नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चरित्र का हिस्सा है। प्रथम सत्र में श्री देवी प्रसाद मिश्र, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, विश्व हिंदी परिषद ने "संसदीय प्रश्नावली, उत्तर एवं प्रक्रिया" विषय पर विस्तृत व्याख्यान दिया। उन्होंने संसदीय कार्यप्रणाली में हिंदी की भूमिका, चुनौतियों एवं संभावनाओं पर प्रकाश डालते हुए केंद्र सरकार के विभिन्न विभागों एवं मंत्रालयों में हिंदी के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु नीतिगत मार्गदर्शन प्रदान किया।

साहित्य अकादमी के निदेशक श्री विकास दवे ने "राजभाषा से विश्वभाषा की ओर" विषय पर वक्तव्य देते हुए कहा कि "यदि हम डिजिटल माध्यमों और वैश्विक मंचों पर हिंदी को सशक्त रूप से प्रस्तुत करें, तो यह निश्चय ही एक विश्वभाषा बन सकती है। संस्थान निदेशक व नराकास अध्यक्ष प्रो. सी.सी. त्रिपाठी के कहा कि राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता और सक्रियता ही इसे सशक्त बना सकती है। उन्होंने कहा कि संस्थान शासकीय कार्यों में हिंदी का अधिकतम उपयोग हेतु निरंतर प्रयासरत है और सभी कार्मिक राजभाषा नियमों का पालन करें और कार्यशाला से प्राप्त ज्ञान को अपने कार्यालयों में क्रियान्वित करें। कार्यशाला समन्वयक डॉ.पी.के. पुरोहित ने बताया कि इस कार्यशाला का आयोजन देशभर के नराकास कार्यालयों के मध्य सहयोग एवं संवाद को सशक्त करने हेतु किया गया था। और संस्थान राजभाषा संवाद की श्रृंखला जारी रखेगा। कार्यशाला में समस्त नराकास कार्यालयों से 202 प्रतिभागियों ने भाग लिया ।कार्यशाला का संचालन श्रीमति बबली व श्रीमती शोभा लेखवानी ने किया व आभार ज्ञापन श्री संजय त्रिपाठी, सदस्य सचिव (नराकास) द्वारा दिया गया|

हिंदी को प्रशासनिक दक्षता से जोड़ने की पहल;

संस्थान में राजभाषा समीक्षा बैठक संपन्न

धरातल पर दिखे परिवर्तन : – प्रो. सी.सी. त्रिपाठी

संस्थान में राजभाषा प्रकोष्ठ की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता माननीय निदेशक प्रो. सी.सी. त्रिपाठी द्वारा की गयी। बैठक में विभिन्न विभागों द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं उपयोग के लिए किए जा रहे प्रयासों की समीक्षा की गई। इस अवसर पर प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि हिंदी और भारतीय संस्कृति का गहरा संबंध है—हिंदी साहित्य और कला ने भारतीय संस्कृति को समृद्ध किया है, इसने पारंपरिक मूल्यों को संजोया है और राष्ट्रीय पहचान को सशक्त बनाने में अहम भूमिका निभाई है; अतः हिंदी के प्रयोग से न केवल प्रशासनिक दक्षता बढ़ेगी, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक विरासत को भी मजबूती प्रदान करेगा। राजभाषा कार्य धरातल पर क्रियान्वित कर संस्थान में एक सकारात्मक परिवर्तन लाया जाए। उन्होंने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से आग्रह किया कि वे कार्यालयीन कार्यों में अधिकाधिक हिंदी का प्रयोग करें और इसे व्यवहारिक बनाएं। इसी क्रम में उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि संस्थान के पुस्तकालय में विज्ञान, अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी की पुस्तकों के साथ-साथ समृद्ध हिंदी साहित्य भी उपलब्ध है, जिसे पढ़कर कर्मचारी न केवल अपनी भाषा दक्षता बढ़ा सकते हैं, बल्कि पढ़ने की आदत भी विकसित कर सकते हैं। बैठक में राजभाषा विभाग के समन्वयक प्रो. पी. के पुरोहित ने राजभाषा कार्यों की दिशा में अब तक की प्रगति, उपलब्धियों एवं भावी योजनाओं पर प्रकाश डाला। बैठक में, अधिष्ठाता प्रशासन आर.के दीक्षित, राजभाषा अधिकारी मेजर निशांत ओझा, प्रशासनिक अधिकारी श्री गौतम कुमार, सचिव श्री संजय त्रिपाठी सहित विभिन्न विभागों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस अवसर पर राजभाषा कार्यों में उत्कृष्ट योगदान देने वाले कर्मचारियों को सम्मानित किए जाने की भी घोषणा की गई। बैठक के समापन पर संस्थान की ओर से यह स्पष्ट किया गया कि राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएँ एवं प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाएँगी, जिससे एक सशक्त राजभाषा संस्कृति का निर्माण संभव हो सके।

संस्थान में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन

साहित्यकारों को पुस्तकालयों में होना चाहिए, संग्रहालयों में नहीं: श्री संदीप द्विवेदी

हिंदी हमारे विचारों, परंपराओं और भावनाओं का प्रतिबिंब है: प्रो. चंद्र चारु त्रिपाठी

संस्थान में 10 से 26 सितंबर 2025 तक हिंदी पखवाड़ा आयोजित किया गया किया, जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताओं और गतिविधियों के माध्यम से हिंदी भाषा के महत्व को रेखांकित किया गया। इस आयोजन में हिंदी कार्यशाला, निबंध प्रतियोगिता, चित्र देखो कहानी लिखो, स्वरचित आशु-कविता प्रतियोगिता, श्रुत-लेख प्रतियोगिता, कॉसवर्ड प्रतियोगिता, हास्य कविता, तात्कालिक भाषण, और प्रश्न मंच जैसी गतिविधियाँ शामिल थीं। हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह के मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध कवि और साहित्यकार श्री संदीप द्विवेदी थे व कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक और नराकास के अध्यक्ष प्रो. चंद्र चारु त्रिपाठी ने की व विशिष्ट अतिथि के रूप में श्रीमती वंदना त्रिपाठी उपस्थित थी। श्री संदीप द्विवेदी ने अपने चिर-परिचित अंदाज़ में "रोने से कुछ होता है क्या", "बेमन भी रहना होता है", "राम जैसा संघर्ष होना" जैसी अपनी रचनायें सुनाई व संस्थान की प्रशंसा करते हुए कहा कि तकनीकी संस्थान होने के बाद भी निटर भोपाल राजभाषा के प्रचार-प्रसार में निरंतर सक्रिय है। आमतौर पर तकनीकी संस्थानों से हिंदी में कार्यों की अपेक्षा कम होती है, किन्तु

निटर भोपाल ने हिंदी के विभिन्न मंचो पर अपनी उपस्थिति दर्ज कर इस भ्रम को तोड़ा है। साहित्यकारों को पुस्तकालयों में होना चाहिए, संग्रहालयों में नहीं। संस्थान निदेशक प्रो.

त्रिपाठी ने कहा कि हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि यह हमारे देश की आत्मा और संस्कृति की अभिव्यक्ति है। हिंदी हमारी परंपराओं, संस्कृतियों, और विचारों को साझा मंच पर लाती है, और यही कारण है कि यह न केवल भारत में, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी तेजी से फैल रही है। राजभाषा समन्वयक डॉ. पी.के. पुरोहित ने संस्थान की राजभाषा की उपलब्धियों का वर्णन करते हुए कहा कि गत दो वर्षों में हिंदी के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए संस्थान को कई मंचों से पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं एवं संसदीय समिति द्वारा किए गए निरीक्षण में भी सराहना मिली है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हिंदी न केवल हमारे जीवन का हिस्सा बने, बल्कि हर मंच पर उसे उचित सम्मान भी मिले। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती शोभा लेखवानी व श्री संजय त्रिपाठी द्वारा किया गया। कार्यक्रम के समापन पर प्रतियोगिताएं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए।

क्र.	प्रतियोगिता का नाम	समन्वयक	निर्णायक	तिथि	प्रतिभागी श्रेणी
1.	**निबंध प्रतियोगिता**	श्री कुणाल / श्री निलेश पुनकर	प्रो. अजय कुमार	11.09.2025	प्रथम – श्रीमती बबली चतुर्वेदी द्वितीय – श्री चंद्रभूषण सक्सेना तृतीय – श्रीमती ज्योति वर्मा प्रोत्साहन – श्री जीतेन्द्र चतुर्वेदी
2.	**चित्र देखो कहानी लिखो**	श्रीमती बबली चतुर्वेदी	प्रो. अजय कुमार	12.9.2025	प्रथम – सुश्री रौशनी लोधी द्वितीय – सुश्री दीक्षा मार्को तृतीय – सुश्री श्रेया त्रिपाठी एवं श्री जयेश प्रोत्साहन – श्री अमित बघेल एवं श्री कमलेश गंगवाल
3.	**श्रुत–लेखन प्रतियोगिता**	डॉ इज़हार अहमद/ सुश्री नीताशा	प्रो. इम्तियाज	15.09.2025	प्रथम – श्री पंकज प्रजापति द्वितीय – श्री चंद्रभूषण सक्सेना एवं श्री शिवम खरे तृतीय – श्री पुष्पेन्द्र सिंह तोमर प्रोत्साहन – श्री गौरव बघेल
4.	**स्वरचित आशु-कविता प्रतियोगिता**	श्रीमती रचना गुप्ता/ श्री श्रवण	श्रीमती वंदना त्रिपाठी एवं श्री राग तैलंग	16.09.2025	प्रथम- श्रीमती शोभा लेखवानी द्वितीय – श्रीमती अनीता लाला तृतीय- श्रीमती रचना गुप्ता एवं श्रीमती आरती वर्मा प्रोत्साहन - श्री जितेन्द्र कुमार एवं कमल सिंह

5.	**क्रॉसवर्ड प्रतियोगिता**	श्री सुशील धारगवे /श्री दिलीप प्रधान	डॉ. बशीर	18.09.2025	प्रथम – श्री रमन शिमोले द्वितीय- श्री रीतेंद्र पवार एवं श्री सुधीर त्रिपाठी तृतीय- श्री अभय ओझा एवं श्री धीरज पाण्डेय प्रोत्साहन- श्री सैय्यद अख्तर
6.	**हास्य कविता**	श्रीमती दिव्या विजय	श्रीमती वंदना त्रिपाठी एवं प्रो. पी. के. पुरोहित	19.9.2025	प्रथम- श्री संजय त्रिपाठी द्वितीय – श्रीमती बबली चतुर्वेदी तृतीय- श्रीमती अनीता लाला एवं श्रीमती दिव्या विजय प्रोत्साहन – श्री भगवान सिंह
7.	**चित्र देखो कहानी लिखो**	श्री जीतेन्द्र चतुर्वेदी/ श्री कमल सिंह यादव	श्री राग तैलंग	22.9.2025	प्रथम – श्रीमती भावना मोतियानी द्वितीय – श्री कुनाल वासनिक एवं श्री निलेश पुनकर तृतीय – श्री गजेन्द्र बोहरे प्रोत्साहन – श्री प्रमोद शर्मा
8.	**तात्कालिक भाषण**	श्रीमती शोभा लेखवानी/ श्रीमती बबली चतुर्वेदी	प्रो. अशोक शर्मा	23.09.2025	प्रथम – श्री रितेन्द्र पवार द्वितीय –श्रीमती नीतू अग्रवाल तृतीय –श्रीमती शोभा लेखवानी एवं श्री शिवराम बागरी प्रोत्साहन श्री सचिन कुमार, श्रीमती गुंजन शर्मा एवं रावेन्द्र शुक्ला

संस्थान में आयोजित सामाजिक कल्याण गतिविधियाँ

प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी के जन्मदिन के अवसर पर संस्थान में 18 सितंबर 2025 को समाज के व्यापक कल्याण को बढ़ावा देने के लिए संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों में चिकित्सा शिविर, महिला स्वास्थ्य जागरूकता संवाद और रक्तदान शिविर शामिल थे, जिनका आयोजन स्वास्थ्य केंद्र, महिला प्रकोष्ठ, छात्र कल्याण कार्यालय और एनएसएस इकाई के सहयोग से किया गया। चिकित्सा शिविर का उद्देश्य महिलाओं के स्वास्थ्य मुद्दों पर जागरूकता फैलाना था। इस शिविर में

संकाय, कर्मचारी, छात्र और समुदाय के सदस्य सक्रिय रूप से शामिल हुए। शिविर में रक्तचाप, रक्त शर्करा परीक्षण, स्तन परीक्षण और काउंसलिंग जैसी बुनियादी स्वास्थ्य जांच की गई। महिला स्वास्थ्य जागरूकता संवाद का उद्देश्य महिलाओं के स्वास्थ्य के महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा करना और समग्र कल्याण के लिए रोग प्रतिकारक स्वास्थ्य देखभाल और जीवनशैली प्रबंधन के महत्व को रेखांकित करना था। सत्र में प्रमुख चिकित्सा विशेषज्ञ, ने प्रमुख विषयों जैसे मासिक धर्म स्वच्छता, स्तन स्व-निरीक्षण, गर्भाशय ग्रीवा कैंसर जागरूकता, हार्मोनल स्वास्थ्य, पोषण और तनाव प्रबंधन पर विस्तार से बात की। साथ ही, रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य स्वेच्छिक रक्तदान को प्रोत्साहित करना था। यह शिविर चिकित्सा विशेषज्ञों की देखरेख में आयोजित किया गया और इसमें रक्तदान प्रक्रिया को सुरक्षित रूप से संपन्न किया गया। शिविर में संकाय, कर्मचारी और छात्रों की बड़ी संख्या ने रक्तदान किया।

अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग

"इंजीनियरिंग अनुप्रयोगों के लिए विज्ञान" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 07 से 09 जुलाई एवं 10 से 12 जुलाई, 2025 तक “इंजीनियरिंग अनुप्रयोगों के लिए विज्ञान” विषय पर दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गए। इन कार्यक्रमों में विभिन्न संस्थानों से 69 प्रतिभागियों ने भाग लिया। विज्ञान समाज द्वारा मूल्यांकित किया जाता है क्योंकि इसका ज्ञान और क्षमता मानवता की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने और जीवन स्तर को बेहतर बनाने में मदद करता है। अनुप्रयुक्त विज्ञान का अर्थ है वैज्ञानिक ज्ञान को व्यावहारिक अनुप्रयोगों में परिवर्तित करना, जैसे कि किसी मौजूदा उपकरण पर आधारित नया आविष्कार। यह कार्यक्रम विशेष रूप से विज्ञान के अनुप्रयोगों को इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में समझने पर केंद्रित था। प्रतिभागियों को यह समझने का अवसर मिला कि कैसे विज्ञान के सिद्धांतों को वास्तविक जीवन की समस्याओं में लागू किया जा सकता है। प्रथम प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक प्रो पी.के पुरोहित थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. हुसैन जीवाखान व प्रो बशीरुल्ला शेख ने योगदान दिया तथा द्वितीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. हुसैन जीवाखान थे व संकाय सदस्य के रूप में प्रो पी.के पुरोहित व प्रो बशीरुल्ला शेख ने योगदान दिया।

"परिणाम आधारित शिक्षा के लिए विज्ञान प्रयोगशाला प्रबंधन" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 21 से 26 जुलाई, 2025 तक "परिणाम आधारित शिक्षा के लिए विज्ञान प्रयोगशाला प्रबंधन" विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 44 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रभावी विज्ञान प्रयोगशाला प्रबंधन, परिणाम आधारित शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों और प्रयोगशाला कर्मियों को विज्ञान प्रयोगशालाओं के प्रबंधन के लिए आवश्यक कौशल प्रदान करना था, जिससे सुरक्षा, संगठन और परिणाम आधारित शिक्षा सिद्धांतों के साथ कार्य करना सुनिश्चित हो सके। कार्यक्रम के प्रमुख उद्देश्यों में विज्ञान प्रयोगशालाओं के प्रबंधन के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं को लागू करना, प्रयोगशाला गतिविधियों को परिणाम आधारित शिक्षा के सिद्धांतों से जोड़ने के लिए रणनीतियाँ विकसित करना, प्रयोगशालाओं में सुरक्षा और अनुपालन सुनिश्चित करना, प्रयोगशाला संसाधनों के प्रबंधन के लिए लागत-प्रभावी विधियों का उपयोग करना शामिल थे। इसके अतिरिक्त, कार्यक्रम में प्रयोगशाला सुरक्षा और जोखिम प्रबंधन, विज्ञान प्रयोगशाला प्रबंधन के मूलभूत पहलुओं, और प्रयोगशाला प्रयोगों को सीखने के परिणामों से जोड़ने पर भी विस्तृत चर्चा की गई। कार्यक्रम के दौरान, कु. निताशा ठाकुर द्वारा प्रयोगशाला कार्यों में तकनीकी सहायता प्रदान की गई। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. हुसैन जीवाखान थे व संकाय सदस्य के रूप में प्रो पी.के पुरोहित व प्रो बशीरुल्ला शेख ने योगदान दिया।

"परिणाम-आधारित शिक्षा के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 03 से 05 जुलाई एवं 28 से 30 अगस्त 2025 तक "परिणाम-आधारित शिक्षा के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग" विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 51 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य प्रतिभागियों को NEP 2020 के प्रमुख बिन्दुओं, परिणाम-आधारित शिक्षा (OBE), और प्रौद्योगिकी समाकलन, विशेष रूप से शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के उपयोग को समझने और लागू करने के लिए सशक्त बनाना था। कार्यक्रम से प्रतिभागी NEP 2020, NCrF और NHEQF फ्रेमवर्क्स को समझने, परिणाम-आधारित पाठ्यक्रम डिजाइन करने और शैक्षिक एवं प्रशासनिक सुधार के लिए Open Educational Resources, MOOCs, और ICT उपकरणों का उपयोग करने में सक्षम होंगे। कार्यक्रम में NEP 2020 के कार्यान्वयन की रणनीतियाँ, OBE सिद्धांत और मूल्यांकन, पाठ्यक्रम परिणामों की निर्माण विधि, डिजिटल सामग्री निर्माण (जैसे Canva, Padlet और Kahoot उपकरणों का उपयोग), और शिक्षा में AI अनुप्रयोगों की संभावनाएँ, चुनौतियाँ और प्रभावी शैक्षिक नवाचार पर चर्चा की गई। इन कार्यक्रमों के समन्वयक डॉ बशीरुल्ला शेख थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. रमेश बुरेला, डॉ. हुसैन जीवाखान, डॉ. सुजैन मैथ्यू व डॉ. चंचल मेहरा ने योगदान दिया।

"ई-कॉमर्स एवं आपूर्ति श्रृंखला " विषय पर ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 14 से 18 जुलाई 2025 तक "ई-कॉमर्स एवं आपूर्ति श्रृंखला" विषय पर ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 29 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान, प्रतिभागियों को पीएम गतिशक्ति – राष्ट्रीय मास्टर प्लान फॉर मल्टी-मोडल कनेक्टिविटी पर एक सत्र प्रदान किया गया, जिसका उद्देश्य समेकित इन्फ्रास्ट्रक्चर योजना और लॉजिस्टिक्स प्रबंधन की समझ को बढ़ाना था। इस सत्र में प्रतिभागियों को गतिशक्ति पहल के उद्देश्य से अवगत कराया गया, जिनमें विभागीय बाधाओं को समाप्त करना, मल्टीमोडल कनेक्टिविटी में सुधार, लॉजिस्टिक्स को ऑप्टिमाइज करना, लागत में कमी करना, और भारतीय उद्योगों की वैश्विक प्रतिस्पर्धा को बढ़ाना शामिल था। इसके अलावा, GIS, रिमोट सेंसिंग, AI, IoT और क्लाउड कंप्यूटिंग जैसी तकनीकों के महत्व पर भी चर्चा की गई, जो इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास और लॉजिस्टिक्स ऑप्टिमाइजेशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ बशीरुल्ला शेख थे।

"अनुप्रयुक्त विज्ञान प्रयोगों के डिजाइन में IoT का उपयोग" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 28 जुलाई से 01अगस्त 2025 तक "अनुप्रयुक्त विज्ञान प्रयोगों के डिजाइन में IoT का उपयोग" विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 28 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में IoT के विज्ञान शिक्षा में समाहित करने के महत्व पर विस्तृत चर्चा की गई। प्रतिभागियों को कार्यक्रम के उद्देश्यों और अपेक्षित परिणामों के बारे में जानकारी दी गई, जिसमें तकनीकी रूप से सक्षम, नवोन्मेषी प्रयोगों के डिजाइन के लिए आवश्यक कौशल विकसित करना था। प्रारंभिक सत्रों में IoT की जानकारी, IoT का उपयोग करके विज्ञान प्रयोगों के डिजाइन और प्लेटफार्म जैसे Arduino और TinkerCAD से परिचित कराया गया। प्रतिभागियों ने Arduino Uno बोर्ड की संरचना को समझा और LED ब्लिंकिंग जैसे परिचयात्मक कार्य पूरे किए। इसके बाद के सत्रों में एम्बेडेड सेंसर का उपयोग, Arduino से उनका इंटरफेस और IoT क्लाउड प्लेटफॉर्म्स जैसे ThingSpeak और Blynk के साथ परिचय कराया गया। मध्य सप्ताह के गतिविधियों में तापमान सेंसर और ऑप्टिकल काउपलर्स का उपयोग करके भौतिकी के प्रयोग किए गए। प्रतिभागियों ने अपने-अपने क्षेत्रों से संबंधित IoT आधारित प्रयोगों को डिज़ाइन किया, अपने प्रोजेक्ट कार्यों को संकलित किया और प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. हुसैन जीवाखान थे व संकाय सदस्य के रूप में प्रो संजीत कुमार ने योगदान दिया।

"शिक्षण-अधिगम अनुभव को बढ़ाने के लिए आईसीटी उपकरण" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 28 जुलाई से 01अगस्त, 2025 तक "शिक्षण-अधिगम अनुभव को बढ़ाने के लिए आईसीटी उपकरण" विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 29 प्रतिभागियों ने भाग लिया। आज के डिजिटल युग में, शिक्षकों को अपनी शिक्षण विधियों को छात्रों की बदलती आवश्यकताओं और प्रौद्योगिकी के विकास के अनुरूप ढालना आवश्यक है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य संकाय सदस्यों को आईसीटी उपकरणों का प्रभावी तरीके से उपयोग करने के लिए ज्ञान और व्यावहारिक कौशल प्रदान करना था, ताकि वे एक इंटरएक्टिव और प्रौद्योगिकी-सक्षम शिक्षण वातावरण को बढ़ावा दे सकें। प्रतिभागियों को विभिन्न आईसीटी उपकरणों का समावेश, इंटरएक्टिव अध्ययन सामग्री का डिज़ाइन, मिश्रित शिक्षण रणनीतियों का उपयोग और डिजिटल संसाधनों का प्रयोग करने की विधियाँ सिखाई गई। कार्यक्रम के प्रमुख विषयों में तकनीकी शिक्षा में आईसीटी का अवलोकन, शिक्षक-निर्देशित और छात्र-निर्देशित वातावरण में आईसीटी का उपयोग, बौद्धिक संपदा अधिकार, कॉपीराइट और प्लेगेरिज्म विषयों पर भी विस्तृत चर्चा की गई। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ बशीरुल्ला शेख थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. पी.के.पुरोहित ने योगदान दिया।

"भारतीय ज्ञान परंपरा" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग द्वारा "भारतीय ज्ञान परंपरा" प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत दिनांक जुलाई से सितम्बर 2025 तक पांच प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 260 प्रतिभागियों ने भाग लिया। भारत की सांस्कृतिक और वैज्ञानिक धरोहर में ज्ञान का विशेष स्थान रहा है। प्राचीन काल से ही भारतीय सभ्यता ने न केवल कला, विज्ञान, गणित, और धर्म में, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में अद्वितीय योगदान दिया है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक शिक्षा, विज्ञान, इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी में कैसे एकीकृत किया जा सकता है, इस पर ध्यान केंद्रित करना था। साथ ही, यह कार्यक्रम भारतीय ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों – जैसे दर्शन, वास्तु, ज्योतिष, खगोलशास्त्र, संगीत, नृत्य, चिकित्सा, और प्राचीन प्रौद्योगिकियों – के योगदान को उजागर करने के लिए आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. पी.के. पुरोहित थे।

मैकेनिकल इंजीनियरिंग शिक्षा विभाग

"मैटलैब फॉर इंजीनियर" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के मैकेनिकल इंजीनियरिंग शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 08 से 12 सितम्बर, 2025 तक “मैटलैब फॉर इंजीनियर” विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य गतिशील प्रणालियों, यांत्रिक कंपनों, नियंत्रण प्रणालियों और संख्यात्मक विश्लेषण से संबंधित समस्याओं को हल करने के लिए मैट लैब के उपयोग को बढ़ावा देना था। प्रशिक्षण में प्रतिभागियों ने ओडीई, आईडीई, कंप्यूटर बीजगणित, मैटलैब सिमुलिंक, और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) तथा मशीन लर्निंग (एमएल) के अनुप्रयोगों पर कार्य किया। इस कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. रवि कुमार गुप्ता व प्रो. सुसान एस मैथ्यू थी।

“भारत में पेटेंटिंग प्रक्रिया” पर सेमिनार का आयोजन

संस्थान के मैकेनिकल इंजीनियरिंग शिक्षा विभाग द्वारा इंस्टीट्यूशंस इनोवेशन काउंसिल के सहयोग से दिनांक 10 सितम्बर, 2025 को “भारत में पेटेंट प्रक्रिया” विषय पर सेमिनार का आयोजन।

इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से प्रतिभागियों ने भाग लिया। पेटेंट एक महत्वपूर्ण कानूनी अधिकार है, जो किसी भी नवाचार या नई खोज को कानूनी रूप से सुरक्षित करता है और इसके मालिक को उसे व्यावसायिक रूप से उपयोग करने का अधिकार प्रदान करता है। सेमिनार में पेटेंटिंग के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की, जिसमें पेटेंट प्राप्त करने की प्रक्रिया, उसके कानूनी आयाम, और पेटेंट्स के महत्व को समझाया गया। सत्र में पेटेंटिंग के लिए आवश्यक कदमों को विस्तार से समझाया गया —जैसे कि पेटेंट आवेदन दाखिल करना, इसके लिए जरूरी दस्तावेज़ तैयार करना, पेटेंट की परीक्षा प्रक्रिया, और पेटेंट अधिकार की रक्षा कैसे की जाती है। इस कार्यक्रम की वक्ता डॉ. शिल्पी श्रीवास्तव थी।

"सीएनसी प्रोग्रामिंग एंड सिमुलेशन" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के मैकेनिकल इंजीनियरिंग शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 28 जुलाई से 01 अगस्त, 2025 तक “सीएनसी प्रोग्रामिंग एंड सिमुलेशन” विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 28 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों को आधुनिक विनिर्माण तकनीकों, विशेष रूप से सीएनसी प्रोग्रामिंग और सिमुलेशन, में व्यावहारिक कौशल से लैस करना था। एयरोस्पेस, ऑटोमोटिव और प्रिसिज़न मशीनिंग उद्योगों में सीएनसी तकनीक के बढ़ते उपयोग को ध्यान में रखते हुए, यह आवश्यक है कि शिक्षक इन तकनीकों से अपडेट रहें ताकि वे छात्रों को प्रासंगिक और व्यावहारिक अनुभव प्रदान कर सकें। इस पाठ्यक्रम में सैद्धांतिक अवधारणाओं के साथ-साथ व्यावहारिक प्रशिक्षण भी दिया गया, जिससे शिक्षक कक्षा में सीखने और वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों के बीच सम्बन्ध बना सके। सीएनसी मिलिंग और टर्निंग के साथ-साथ सिमुलेशन टूल्स में दक्षता हासिल करने के बाद, शिक्षक अपने पाठ्यक्रम में इन तकनीकों को प्रभावी रूप से शामिल करने में सक्षम होंगे। इस कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. रवि कुमार गुप्ता व प्रो. ए.के. सराठे थे।

पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन शिक्षा विभाग

"परिणाम आधारित पाठ्यक्रम डिजाइन एवं विकास" पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 14 से 18 जुलाई 2025 तक केंद्रीय विश्वविद्यालय, राजस्थान में "परिणाम आधारित पाठ्यक्रम डिजाइन एवं विकास" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 18 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों और पाठ्यक्रम डिजाइनरों को परिणाम आधारित शिक्षा पद्धतियों से परिचित कराना था, ताकि वे विद्यार्थियों के सीखने के परिणामों को प्राथमिकता देते हुए अधिक प्रभावी पाठ्यक्रमों का निर्माण कर सकें। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. अंजू रौले थी व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. जे. पी. टेगर ने योगदान दिया।

"परिणाम आधारित पाठ्यक्रम डिजाइन, विकास, कार्यान्वयन एवं मूल्यांकन" पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 28 जुलाई से 01 अगस्त 2025 तक "परिणाम आधारित पाठ्यक्रम डिजाइन, विकास, कार्यान्वयन एवं मूल्यांकन" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 38 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों और पाठ्यक्रम डिजाइनरों को परिणाम आधारित शिक्षा पद्धतियों के महत्व से अवगत कराना था, ताकि वे पाठ्यक्रम के हर चरण—डिजाइन, विकास, कार्यान्वयन और मूल्यांकन में गुणवत्ता और परिणामों की प्रगति सुनिश्चित कर सकें। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. अंजू रौले थी व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. जे. पी. टेगर व डॉ. रोली प्रधान ने योगदान दिया।

"परिणाम आधारित पाठ्यक्रम: कार्यान्वयन और मूल्यांकन" पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 04 से 08 अगस्त 2025 तक "परिणाम आधारित पाठ्यक्रम: कार्यान्वयन और मूल्यांकन" विषय पर एस.बी.टी.ई. पटना में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 88 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य आउटकम-बेस्ड (परिणाम आधारित) पाठ्यक्रम के विकास, कार्यान्वयन और मूल्यांकन के विभिन्न आयामों की गहरी समझ प्रदान करना था।प्रतिभागियों को कैसे परिणामों को केंद्र में रखकर पाठ्यक्रम तैयार किया जाए, किस प्रकार से उसे लागू किया जाए और कैसे मूल्यांकन के द्वारा शिक्षा की गुणवत्ता को मापा जाए आदि विषयों पर विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. अंजू रौले थी व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. जे. पी. टेगर व डॉ. निशीथ दुबे ने योगदान दिया।

"परिणाम आधारित शिक्षा एवं पाठ्यक्रम" पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 08 से 12 सितम्बर 2025 तक “परिणाम आधारित शिक्षा एवं पाठ्यक्रम” विषय पर इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (आई.ई.टी) लखनऊ में पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 46 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को परिणाम आधारित शिक्षा और पाठ्यक्रम डिज़ाइन की अवधारणाओं से अवगत कराना था, ताकि वे शैक्षिक उद्देश्यों को छात्रों के सीखने के परिणामों के अनुरूप विकसित कर सकें। प्रतिभागियों को विशेष रूप से यह समझाने का प्रयास किया गया कि परिणामों को केंद्र में रखकर पाठ्यक्रम के विकास से लेकर उसकी कार्यान्वयन प्रक्रिया तक की योजना कैसे बनाई जाए, और इस प्रक्रिया में मूल्यांकन की भूमिका क्या होगी। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. अंजू रौले थी व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. बी. एल. गुप्ता, डॉ. संजय अग्रवाल व डॉ. एम. ए. रिज़वी ने योगदान दिया।

"इनोवेटिव टीचिंग पेडागॉजी एंड टेक्नोलॉजी इंटीग्रेटेड इंस्ट्रक्शन्स" पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 21 से 25 जुलाई 2025 तक "इनोवेटिव टीचिंग पेडागॉजी एंड टेक्नोलॉजी इंटीग्रेटेड इंस्ट्रक्शन्स" विषय पर भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी और प्रबंधन संस्थान (आईआईआईटीएम) ग्वालियर में पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 47 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों और शिक्षाविदों को नवीनतम शिक्षण पद्धतियों और तकनीकी उपकरणों से अवगत कराना था, जिससे वे अपनी कक्षाओं में तकनीकी उपकरणों का प्रभावी उपयोग कर सकें और छात्रों को अधिक आकर्षक एवं प्रभावी तरीके से शिक्षा प्रदान कर सकें। इस कार्यक्रम में ई-लर्निंग प्लेटफार्म, स्मार्ट क्लासरूम तकनीक, और इंटरेक्टिव शिक्षण विधियों पर गहन चर्चा की गई। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. जे. पी. टेगर व डॉ. आर. के. कपूर थे।

एम.एस.बी.ऐ.ई.प्रोजेक्ट कार्यशाला आयोजित

संस्थान के पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 27 से 28 जुलाई एवं 15 से 19 सितम्बर 2025 तक महाराष्ट्र स्टेट बोर्ड ऑफ़ आर्ट एजुकेशन के संयुक्त तत्वाधान में एम.एस.बी.ऐ.ई. प्रोजेक्ट हेतु दो कार्यशालाओं का आयोजन पुणे, औरंगाबाद व सर जे .जे. स्कूल ऑफ़ आर्ट, मुंबई में किया गया। इन कार्यशालाओं में विभिन्न संस्थानों से 232 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यशालाओं का मुख्य उद्देश्य महाराष्ट्र राज्य के विभिन्न कला पाठ्यक्रमों के लिए एक समग्र और उन्नत करिकुलम तैयार करना था, जो एनईपी-2020 और एनसीआरएफ 2023 की गाइडलाइंस के अनुरूप हो। इस कार्यक्रम में विभिन्न डिप्लोमा प्रोग्राम्स जैसे कि फाउंडेशन, डिप्लोमा ड्राइंग एंड प्लानिंग, डिप्लोमा एप्लाइड आर्ट, स्कल्पचर एंड मॉडलिंग, टेक्सटाइल डिज़ाइन, इंटीरियर्स डेकोरेशन, और मेटल वर्क आदि के लिए पाठ्यक्रम विकास की दिशा में महत्वपूर्ण जानकारी साझा की। कार्यशाला में पुणे और औरंगाबाद में स्थित 105 और 94 आर्ट कॉलेजों के शिक्षकों को करिकुलम के पुनरावलोकन और सुधार की प्रक्रिया से अवगत कराया। इस कार्यक्रम में एम.एस.बी.ऐ.ई. के निदेशक प्रो. विनोद आर. दांडगे, एम.एस.ऐ.ई. के निदेशक डॉ. इंगले, सचिव श्री संदीप डोंगरे, उपसचिव श्रीमती आरती श्रावस्ती, और सर जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट, आर्किटेक्चर की चीफ कोऑर्डिनेटर श्रीमती स्मिता किंकाले उपस्थित थीं। इन कार्यशालाओं के समन्वयक डॉ. जे. पी. टेगर थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. अंजू रौले व डॉ. रोली प्रधान ने योगदान दिया।

विस्तार केंद्र अहमदाबाद में आयोजित कार्यक्रम

"इंटरप्रेन्योरशिप एंड स्टार्टअप" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र अहमदाबाद द्वारा दिनांक 01 से 05 सितम्बर 2025 व 22 से 26 सितम्बर 2025 तक “इंटरप्रेन्योरशिप व स्टार्टअप” विषय पर भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान अहमदाबाद के सहयोग से पाँच दिवसीय दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गए। इस कार्यक्रम में मध्यप्रदेश के विभिन्न संस्थानों से 63 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य भारत में उद्यमिता और स्टार्टअप को बढ़ावा देना था, खासकर उन क्षेत्रों में जहां युवा और शिक्षित जनसंख्या से नया व्यवसाय शुरू करने की अपार संभावना है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम संस्थानों और विश्वविद्यालयों के ट्रेनिंग और प्लेसमेंट अधिकारियों को उद्यमिता की दिशा में सक्षम बनाने के लिए आयोजित किया गया था। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य इन अधिकारियों को उद्यमिता के मूल सिद्धांतों और स्टार्टअप के लिए आवश्यक कौशल से लैस करना था, ताकि वे छात्रों और अन्य युवा उद्यमियों को बेहतर मार्गदर्शन दे सकें। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. निशीथ दुबे थे।

"एनईपी 2020 के अनुसार परिणाम आधारित शिक्षा" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र अहमदाबाद द्वारा दिनांक 22 से 26 सितम्बर 2025 तक “एनईपी 2020 के अनुसार परिणाम आधारित शिक्षा” विषय पर सरदार पटेल यूनिवर्सिटी, वल्लभ विद्यानगर में पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 100 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य शिक्षकों को एनईपी 2020 के अनुसार परिणाम आधारित शिक्षा के सिद्धांतों और इसके लागू करने के तरीकों के बारे में गहन ज्ञान देना था। परिणाम आधारित शिक्षा, जिसे वैश्विक शिक्षा मानकों और उद्योग की आवश्यकताओं के अनुरूप डिज़ाइन किया गया है, उच्च शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन का प्रतीक है। यह शिक्षा प्रणाली में छात्रों के लिए स्पष्ट और मापनीय परिणामों पर जोर देती है, जिससे उनका शैक्षणिक और व्यावसायिक विकास दोनों सुनिश्चित हो सके। कार्यक्रम में बदलते तकनीकी युग और उद्योग की बदलती आवश्यकताओं के मद्देनज़र पाठ्यक्रम को कैसे अपडेट और पुनः संरचित किये जाने पर भी विस्तृत चर्चा की गयी। इस कार्यक्रम की समन्वयक प्रो. सुजैन एस मैथ्यू थी व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. जे. पी. टेगर, डॉ. हुसैन जीवाखान, व डॉ. अंजना तिवारी ने अपना योगदान प्रदान किया।

"ई-कंटेंट डेवलपमेंट एंड वीडियो प्रोडक्शन फॉर मूक्स" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र अहमदाबाद द्वारा दिनांक 21 से 25 जुलाई 2025 तक "ई-कंटेंट डेवलपमेंट एंड वीडियो प्रोडक्शन फॉर मूक्स" विषय पर सरदार पटेल यूनिवर्सिटी, वल्लभ विद्यानगर में पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 26 प्रतिभागियों ने भाग लिया। वर्तमान में ऑनलाइन शिक्षा का महत्व तेजी से बढ़ रहा है, और विशेष रूप से मूक्स के द्वारा लाखों छात्र एक साथ विभिन्न शैक्षिक पाठ्यक्रमों का लाभ उठा सकते हैं, लेकिन इसके साथ जुड़ी चुनौती यह है कि कंटेंट को आकर्षक, प्रभावी और व्यावसायिक तरीके से तैयार किया जाए। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य था प्रशिक्षकों को मूक्स के लिए प्रभावी ई-कंटेंट और वीडियो प्रोडक्शन तैयार करने की प्रक्रिया में प्रशिक्षित करना था। प्रशिक्षण कार्यक्रम में ई-कंटेंट डेवलपमेंट और वीडियो प्रोडक्शन की सभी प्रमुख तकनीकों पर विस्तार से चर्चा की गई। प्रशिक्षकों को वीडियो कंटेंट तैयार करने की प्रक्रिया में स्क्रिप्ट लेखन, रिकॉर्डिंग, वीडियो संपादन और वीडियो प्रकाशन के विभिन्न पहलुओं के बारे में गहरी जानकारी दी गई। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. संदीप एस. केदार थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. चंचल मेहरा ने अपना योगदान प्रदान किया।

"मुख्य शिक्षण कौशल" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र अहमदाबाद द्वारा दिनांक 21 से 25 जुलाई 2025 तक "मुख्य शिक्षण कौशल" विषय पर सरदार पटेल यूनिवर्सिटी, वल्लभ विद्यानगर में पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 32 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य शिक्षकों को शिक्षा के विभिन्न पहलुओं से परिचित कराना था, ताकि वे न केवल अपनी कक्षा में छात्रों को अच्छी तरह से मार्गदर्शन कर सकें, बल्कि उनके सीखने की प्रक्रिया को भी अधिक प्रभावी बना सकें। कैसे शिक्षक अपनी शैक्षिक सामग्री को विद्यार्थियों की समझ के अनुसार प्रस्तुत कर सकते हैं, कक्षा में छात्रों के साथ संवाद स्थापित कर सकते हैं और विभिन्न शैक्षिक दृष्टिकोणों का उपयोग करके शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ा सकते हैं, जैसे विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. एम. ए. रिजवी थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. निशीथ दुबे ने अपना योगदान प्रदान किया।

"जनेरेटिव एआई" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र अहमदाबाद द्वारा दिनांक 18 से 22 अगस्त 2025 तक "जनेरेटिव एआई" विषय पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया। आज के डिजिटल और तकनीकी युग में, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और मशीन लर्निंग (ML) के क्षेत्र में तेजी से विकास हो रहा है। विशेष रूप से जनेरेटिव एआई (Generative AI) ने शिक्षा, चिकित्सा, उद्योग, और विभिन्न अन्य क्षेत्रों में नए द्वार खोले हैं। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को जनेरेटिव एआई की अवधारणाओं से परिचित कराना और इसे विभिन्न अनुप्रयोगों में कैसे प्रभावी तरीके से लागू करना सिखाना था। जनेरेटिव एआई, जैसे कि जनेरेटिव एडवर्सेरियल नेटवर्क्स (GANs), प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP) और अन्य जटिल मशीन लर्निंग मॉडल, जो नए डेटा या सामग्री को उत्पन्न करने के लिए प्रशिक्षित होते हैं, ने कई उद्योगों में क्रांतिकारी बदलाव लाए हैं। इस प्रशिक्षण में, प्रतिभागियों को इन तकनीकों के बारे में व्यावहारिक ज्ञान दिया गया। प्रशिक्षण के दौरान, जनेरेटिव एआई के बुनियादी सिद्धांतों, इसके विकास और इसके अनुप्रयोगों पर चर्चा की गई। प्रशिक्षण में विशेष रूप से GANs, ट्रांसफार्मर मॉडल्स, और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP) जैसे क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया। इन तकनीकों का प्रयोग कला, मीडिया, मेडिकल इमेजिंग, और अन्य क्रिएटिव क्षेत्रों में किया जा रहा है। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. एस. गणपति थे व प्रो. हेमलता कटपारा, व्याख्याता, आरसीटीआई ने अपना योगदान प्रदान किया।

"व्यावसायिक उत्कृष्टता के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र अहमदाबाद द्वारा दिनांक 07 से 11 जुलाई 2025 तक “व्यावसायिक उत्कृष्टता के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण” विषय पर इंफ्रास्ट्रक्चर, प्रौद्योगिकी, अनुसंधान एवं प्रबंधन संस्थान (आईआईटीआरएएम) में पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य कार्यस्थल पर सकारात्मक दृष्टिकोण और पेशेवर कौशलों को विकसित करना था। कार्यक्षेत्र में पेशेवर शिष्टाचार, कार्यस्थल पर अनुशासन और कार्यप्रवाह की समझ के बिना कोई भी कर्मचारी उत्कृष्टता प्राप्त नहीं कर सकता। इसके साथ ही, कार्यशैली में सकारात्मक दृष्टिकोण से कर्मचारियों को अपने कार्यों में ज्यादा आत्मविश्वास और सफलता मिलती है। जब कार्यशैली में सकारात्मक दृष्टिकोण होता है, तो यह न केवल व्यक्तिगत विकास को प्रभावित करता है, बल्कि समग्र संगठन की कार्यक्षमता को भी बढ़ाता है। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. निशीथ दुबे थे।

"एडवांसेस इन एआई/एमएल/आईओटी फॉर इंजीनियरिंग एप्लीकेशन" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र अहमदाबाद द्वारा दिनांक 8 से 12 सितंबर 2025 तक “एडवांसेस इन एआई/एमएल/आईओटी फॉर इंजीनियरिंग एप्लीकेशन” विषय पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया। वर्तमान में, उन्नत तकनीकी क्षेत्रों जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), मशीन लर्निंग (एमएल), और इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) ने इंजीनियरिंग एप्लिकेशन्स में नई संभावनाओं को खोल दिया है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को इन अत्याधुनिक तकनीकों का उपयोग करके वास्तविक इंजीनियरिंग समस्याओं का समाधान करने की क्षमता प्रदान करना था। विशेष रूप से, इसका उद्देश्य एआई, एमएल, और आईओटी के माध्यम से प्रक्रियाओं के स्वचालन, डेटा एनालिटिक्स, और स्मार्ट सिस्टम डिज़ाइन करने के तरीके सिखाना था, जो उद्योगों की कार्यप्रणाली को अधिक प्रभावी और दक्ष बना सकें। उन्नत तकनीकें आज के इंजीनियरिंग परिदृश्य में न केवल तकनीकी समस्याओं को हल कर रही हैं, बल्कि नवीन उत्पादों और समाधानों के निर्माण में भी योगदान दे रही हैं, इस पर भी विस्तृत चर्चा की गयी। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. निशीथ दुबे थे।

"सेमीकंडक्टर इनोवेशन: संकाय सदस्यों को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करना" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र अहमदाबाद द्वारा दिनांक 04 से 08 अगस्त 2025 तक "सेमीकंडक्टर इनोवेशन: संकाय सदस्यों को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करना" विषय पर अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (इसरो) - अहमदाबाद के सहयोग से पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सेमिकंडक्टर क्षेत्र में हो रहे नवीनतम तकनीकी परिवर्तनों और शोधों से शिक्षकों को अवगत कराना था, ताकि वे अपने छात्रों को भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए बेहतर तरीके से तैयार कर सकें। सेमिकंडक्टर तकनीकी विकास की गति और इसके विभिन्न अनुप्रयोगों को समझते हुए, शिक्षकों को इस क्षेत्र में आवश्यक ज्ञान और कौशल प्रदान करना था, ताकि वे अपने शैक्षिक कार्यों में इन ज्ञान को प्रभावी ढंग से लागू कर सकें। यह कार्यक्रम विशेष रूप से उन शिक्षकों के लिए डिजाइन किया गया था, जो उच्च शिक्षा और तकनीकी प्रशिक्षण के क्षेत्र में कार्यरत हैं, ताकि वे सेमिकंडक्टर क्षेत्र में होने वाली नई प्रगति और आगामी चुनौतियों से निपटने के लिए तैयार हो सकें। इस कार्यक्रम की समन्वयक प्रो. सीमा वर्मा व डॉ. पल्लवी भटनागर थी तथा डॉ. मिशेल प्रजापति ने अपना योगदान दिया।

"रिलायबिलिटी एनालिसिस एंड ऑप्टिमाइजेशन ऑफ मॉडर्न पावर"

विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र अहमदाबाद द्वारा दिनांक 30 जून से 04 जुलाई 2025 तक “रिलायबिलिटी एनालिसिस एंड ऑप्टिमाइजेशन ऑफ मॉडर्न पावर” विषय पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 23 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य पावर सिस्टम्स के रिलायबिलिटी एनालिसिस और ऑप्टिमाइजेशन के क्षेत्र में नवीनतम तकनीकी और अनुसंधान से प्रतिभागियों को अवगत कराना था। पावर नेटवर्क्स की बढ़ती जटिलताओं और उनके प्रभावी संचालन के लिए इसकी विश्वसनीयता का मूल्यांकन करना आवश्यक है। साथ ही, पावर सिस्टम्स के ऑप्टिमाइजेशन के द्वारा उनकी कार्यक्षमता में सुधार करना और लागत कम करने के लिए नए उपायों पर विचार किया गया। कार्यक्रम में पावर सिस्टम्स की कार्यक्षमता को सुधारने, उनकी विश्वसनीयता बढ़ाने और उनकी ऊर्जा क्षमता का उपयोग करने के लिए प्रभावी तरीकों पर भी विस्तृत चर्चा की गई। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. के. मनिकवासागम थे तथा डॉ. वी.आर. पटेल, सह-प्राध्यापक व डॉ. मिहिर वासवदा, सह-प्राध्यापक लालभाई दलपतभाई कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग योगदान दिया।

विस्तार केंद्र गोवा में आयोजित कार्यक्रम

"उद्योग में कार्य नैतिकता, सुरक्षा एवं प्राथमिक चिकित्सा" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र गोवा द्वारा दिनांक 14 से 18 जुलाई 2025 तक "उद्योग में कार्य नैतिकता, सुरक्षा एवं प्राथमिक चिकित्सा" विषय पर पाँच दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 74 प्रतिभागियों ने भाग लिया। आज के औद्योगिक वातावरण में, मजबूत कार्य नैतिकता, कार्यस्थल सुरक्षा, और प्राथमिक चिकित्सा कौशल न केवल उत्पादकता के लिए बल्कि कर्मचारियों की भलाई के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों में इन पहलुओं के प्रति जागरूकता बढ़ाना, नैतिक प्रथाओं को बढ़ावा देना, और उन्हें आपातकालीन स्थिति में प्रभावी प्रतिक्रिया देने के लिए सशक्त बनाना था। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. ऐलन संजय रोचा थे व अन्य विशेषज्ञों के रूप में डॉ. ब्रेंडन पेरोज़, इंजी गेरार्ड डी'मेलो, मिनेश तार व ग्रेसिएनो गोम्स ने योगदान दिया।

"उद्योग-संस्थान संपर्क व प्लेसमेंट में सुधार" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र गोवा द्वारा दिनांक 23 से 25 जुलाई 2025 तक "उद्योग-संस्थान संपर्क व प्लेसमेंट में सुधार" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 64 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य उद्योग की आवश्यकताओं को समझना और यह पहचानना था कि छात्रों को उन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कौन-कौन सी कौशल प्राप्त करनी चाहिए। उद्योग विशेषज्ञों ने अपने विचार साझा किए, जबकि तकनीकी संस्थानों ने यह चर्चा की कि छात्रों को प्रभावी रूप से किस प्रकार प्रशिक्षित किया जाए, ताकि उनकी व्यावसायिक योग्यताएं बढ़ सकें। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. ऐलन संजय रोचा थे।

"सौर पीवी एंड थर्मल इंस्टॉलेशन एंड ट्रबलशूटिंग" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र गोवा द्वारा दिनांक 04 से 08 अगस्त 2025 तक "सौर पीवी एंड थर्मल इंस्टॉलेशन एंड ट्रबलशूटिंग" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 24 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य सौर तकनीकी क्षेत्र में बढ़ती विशेषज्ञता की आवश्यकता को संबोधित करना था, ताकि युवा बेरोजगारी को कम किया जा सके और पर्यावरणीय स्थिरता में योगदान दिया जा सके। सौर पीवी और थर्मल सिस्टम के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई, जिसमें सौर पैनल के विभिन्न प्रकार, पीवी और थर्मल सिस्टम के घटक, उनकी संरचना और इंस्टॉलेशन प्रक्रिया पर भी विस्तृत चर्चा की गई। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. ऐलन संजय रोचा थे व अन्य विशेषज्ञों के रूप में डॉ. के. मनिकवासगम व उद्योग विशेषज्ञ अनीश सूसा ने योगदान दिया।

"शोध पत्र लेखन एवं प्लेगरिज्म" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र गोवा द्वारा दिनांक 18 से 22 अगस्त 2025 तक "शोध पत्र लेखन एवं प्लेगरिज्म" विषय पर पांच दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 133 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य शोध पत्र लेखन की विधियों और प्लेगरिज्म से बचने की प्रक्रिया को बेहतर तरीके से समझाना था। इस दौरान प्रतिभागियों को उनके शोध विषयों पर गहन विचार-विमर्श किया गया, और उन्हें आने वाली चुनौतियों का समाधान प्रदान किया गया। कार्यक्रम ने प्रतिभागियों को उच्च गुणवत्ता वाले, प्लेगरिज्म-मुक्त शोध पत्र लिखने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. ऐलन संजय रोचा थे व विशेषज्ञ के रूप में प्रो. एम. ए. रिज़वी ने योगदान दिया।

"ट्रबलशूटिंग ऑफ़ ड्यूल फ्यूल इंजन" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र गोवा द्वारा दिनांक 08 से 12 सितम्बर 2025 तक "ट्रबलशूटिंग ऑफ़ ड्यूल फ्यूल इंजन" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 23 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य तकनीकी शिक्षा में शिक्षकों को ड्यूल फ्यूल इंजन के संचालन और डिजाइन की विस्तृत जानकारी प्रदान करना था, ताकि वे वास्तविक डेटा और सॉफ़्टवेयर उपकरणों का उपयोग करके इंजन की समस्या का निदान कर सकें। कार्यक्रम में इंजन की संरचना, प्रौद्योगिकी, बुनियादी सिद्धांत, घटक, ईंधन प्रणाली, और विभिन्न संचालन मोड पर विस्तृत जानकारी दी गई। प्रतिभागियों को सुरक्षा प्रथाओं और प्रिवेंटिव मेंटेनेंस का व्यावहारिक प्रशिक्षण भी दिया गया। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. ऐलन संजय रोचा थे।

"परिणाम-आधारित मूल्यांकन" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र गोवा द्वारा दिनांक 22 से 26 सितम्बर 2025 तक "परिणाम-आधारित मूल्यांकन" विषय पर पांच दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 44 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को परिणाम-आधारित मूल्यांकन (Outcome-Based Assessment) के सिद्धांतों, रणनीतियों, और तकनीकों से परिचित कराना था, ताकि वे शैक्षिक उद्देश्यों के अनुरूप मूल्यांकन प्रणालियों को प्रभावी ढंग से डिजाइन, लागू, और मूल्यांकित कर सकें। कार्यक्रम में इस पर जोर दिया गया कि कैसे मापने योग्य परिणाम तैयार किए जाएं, उन्हें पाठ्यक्रम उद्देश्यों से जोड़ा जाए, और मूल्यांकन उपकरणों का सही तरीके से उपयोग किया जाए। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के अनुरूप था, जो परिणाम-आधारित शिक्षा, कौशल विकास, और मूल्यांकन सुधारों का समर्थन करता है, ताकि शिक्षा समग्र, कौशल-आधारित और छात्र-केंद्रित हो सके। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. ऐलन संजय रोचा थे।

समाचार पत्रों में संस्थान की गतिविधियाँ

आपातकाल का घाव सदियों तक रहेगा : कडेल

एनआईटीटीटीआर में संविधान हत्या वर्ष पर विशेषज्ञ व्याख्यान आयोजित

भोपाल, 1 जुलाई. एनआईटीटीटीआर, भोपाल में संविधान हत्या वर्ष विषय पर मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी के निदेशक डॉ. अशोक कडेल का विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया. इस अवसर पर डॉ कडेल ने आपातकाल के समय के अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहा की कैसे उस समय संविधान की हत्या की गयी एवं कई बार संशोधन किये गए जिन पर विचार आवश्यक है.

अपने व्याख्यान में डॉ. काडेल ने संविधान के सामने अतीत और वर्तमान में उत्पन्न चुनौतियों, संविधानिक उल्लंघनों के उदाहरणों, तथा शिक्षकों और बुद्धिजीवियों की भूमिका पर विस्तार से चर्चा की और बताया कि यह फैसला तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने लिया था और इसी के साथ आजाद भारत के लोग सरकार के गुलाम बनकर रह गए थे द्य आम लोगों की स्वतंत्रता समाप्त कर दी गई थी और 21 महीनों तक विपक्ष के सभी नेता जेल में बंद कर दिए गए थे. उन्होंने बताया की कैसे उन्हें निर्दोष होते हुए भी जेल में बंद कर यातनाये दी गयी थी. उन्होंने प्रतिभागियों से आह्वान किया कि वे विद्यार्थियों और समाज में संविधानिक जागरुकता को बढ़ावा दें. एनआईटीटीटीआर, भोपाल के निदेशक डॉ सी. सी. त्रिपाठी ने कहा कि संविधान हत्या वर्ष का उद्देश्य ऐसे कृत्यों या संशोधनों पर प्रकाश डालना है, जिन्हें संविधान के मूल सिद्धांतों और उसकी आत्मा के विपरीत माना जाता है. इस तरह के आयोजनों का उद्देश्य संविधान की पवित्रता, लोकतांत्रिक मूल्यों और नागरिक अधिकारों के प्रति जागरुकता बढ़ाना है.

हिंदी और भारतीय संस्कृति का गहरा संबंध

▸ **एनआईटीटीटीआर भोपाल में राजभाषा समीक्षा बैठक**

भोपाल, 3 जुलाई. एनआईटीटीटीआर, भोपाल में राजभाषा प्रकोष्ठ की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया. बैठक की अध्यक्षता निदेशक प्रो. सी.सी. त्रिपाठी द्वारा की गई. बैठक में विभिन्न विभागों द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं उपयोग के लिए किए जा रहे प्रयासों की समीक्षा की गई.

इस अवसर पर प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि हिंदी और भारतीय संस्कृति का गहरा संबंध है—हिंदी साहित्य और कला ने भारतीय संस्कृति को समृद्ध किया है, इसने पारंपरिक मूल्यों को संजोया है और राष्ट्रीय पहचान को सशक्त बनाने में अहम भूमिका निभाई है; अतः हिंदी के प्रयोग से न केवल प्रशासनिक दक्षता बढ़ेगी, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक विरासत को भी मजबूती प्रदान करेगा. राजभाषा कार्य धरातल पर क्रियान्वित कर संस्थान में एक सकारात्मक परिवर्तन लाया जाए. उन्होंने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से आग्रह किया कि वे कार्यालयीन कार्यों में अधिकाधिक हिंदी का प्रयोग करें और इसे व्यवहारिक बनाएं. इसी क्रम में उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि एनआईटीटीटीआर भोपाल के पुस्तकालय में विज्ञान, अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी की पुस्तकों के साथ-साथ समृद्ध हिंदी साहित्य भी उपलब्ध है जिसे पढ़कर कर्मचारी न केवल अपनी भाषा दक्षता बढ़ा सकते हैं, बल्कि पढ़ने की आदत भी विकसित कर सकते हैं. बैठक में राजभाषा विभाग के समन्वयक प्रो. पी. के पुरोहित ने राजभाषा कार्यों की दिशा में अब तक की प्रगति, उपलब्धियों एवं भावी योजनाओं पर प्रकाश डाला. बैठक में अधिष्ठाता प्रशासन आर.के दीक्षित, राजभाषा अधिकारी मेजर निशांत ओझा, प्रशासनिक अधिकारी गौतम कुमार, सचिव संजय त्रिपाठी, बबली चतुर्वेदी सहित विभिन्न विभागों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया.

निटर में भारतीय ज्ञान परंपरा पर व्याख्यान का आयोजन

विशेषज्ञ बोले, भारतीय चिंतन में प्रकृति को पूजने का विधान रहा है

भारतीय परंपराएं वैज्ञानिक तथ्यों पर पूरी तरह आधारितः डॉ. शिवकुमार

हरिभूमि न्यूज ▸▸ भोपाल

जधानी स्थित एनआईटीटीटीआर (निटर) में सोमवार ी भारतीय ज्ञान परंपरा विषय पर विशेष व्याख्यान का भायोजन किया गया। मुख्य वक्ता डॉ. शिव कुमार र्मा, राष्ट्रीय संगठन सचिव, विज्ञान भारती रहे। इस भवसर पर डॉ. शिव कुमार शर्मा ने कहा कि हमारे देश ी सभी परंपराएं वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित हैं।

इन तथ्यों की वैज्ञानिक व्याख्या और प्रयोग भाधारित परंपरा के हजारों प्रमाण हमारे ग्रंथों तिहासिक अवशेषों में उपलब्ध हैं। भारतीय ज्ञान रंपरा एक निरंतरता है, इसके वैज्ञानिक पहलुओं को समझें एवं जीवन व्यवहार में लाएं, तभी इसके उद्देश्य ी पूर्ति हो सकती है। सिर्फ पढ़कर स्टूडेंट्स को पढ़ाने े भारतीय ज्ञान परंपरा का उद्देश्य पूर्ण नहीं होगा। ारतीय चिंतन में प्रकृति को पजने का विधान रहा है।

तकनीकी दक्षता के साथ सांस्कृतिक चेतना का समावेश करना उद्देश्य

निटर भोपाल के निदेशक डॉ. त्रिपाठी ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा केवल इतिहास नहीं, बल्कि एक जीवंत बौद्धिक परंपरा है, जिसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ पुनः समाज के केंद्र में लाना सम की आवश्यकता है। हमारा उद्देश्य तकनीकी दक्षता के साथ-साथ सांस्कृतिक चेतना और भारतीय वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समावेश करना है, जिससे शिक्षा अधिक सार्थक एवं समाजोपयोगी बन सके। डीन साइंस एवं हेड आईकेएस प्रो. पुरोहित ने कहा कि यहां उपस्थित सभी शिक्षक भारतीय ज्ञान के प्रसारक ही नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक पुनरुत्थान के वाहक भी हैं।

भारतीय ज्ञान परम्परा, वेदों से विज्ञान तकः डॉ शिवकुमार शर्मा

भारतीय ज्ञान परम्परा से जुड़ा कार्य एक साधना है : डॉ शिवकुमार शर्मा

नित्य नमन टाइम्स | भोपाल

एनआईटीटीटीआर भोपाल में उच्च शिक्षा विभाग मध्य प्रदेश एवं देश भर से आने बाले शासकीय महाविधालयों में पदस्थ प्राध्यापकों हेतु चल रहे प्रशिक्षण कार्यक्रम में भारतीय ज्ञान परम्परा एक वैज्ञानिक दृष्टि विषय पर विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया।

इस कार्यक्रम के मुख्या वक्ता डॉ शिव कुमार शर्मा जी राष्ट्रीय संगठन सचिव, विज्ञान भारती ने भारतीय ज्ञान परम्परा के विविध आयामो पर चर्चा करते हुए कहा की धर्म, दर्शन, विज्ञान, चिकित्सा, वास्तुशास्त्र एवं धातुकर्म , ज्योतिष, खगोल, स्थापत्य हमारे संस्थान में भारतीय ज्ञान परंपरा विभाग की स्थापना की गयी हे जिसका उद्देश्य भारतीय शैक्षिक, वैज्ञानिक ,सांस्कृतिक और सामाजिक धरोहर को पुनः जीवित कर वैज्ञानिक तथ्यों के साथ समकालीन रूप से प्रासंगिक बनाना हे।

इस प्रकार के आयोजन संस्थान को न केवल तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में समृद्ध करते हैं, बल्कि मूल्य-आधारित, समग्र एवं भारतीय दृष्टिकोण युक्त शिक्षा की दिशा में प्रेरित करते हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनः स्थापित करना हमारी साझा जिम्मेदारी है। डीन साइंस एवं हेड आईकेएस प्रो पी के पुरोहित ने कहा की निटर भोपाल उच्च शिक्षा विभाग मध्य प्रदेश एवं देश भर के शिक्षकों के लिए भारतीय ज्ञान परम्परा

Beyond Words : TOLIC Meeting Charts a Heartfelt New Course for Official Language Advancement

TOLIC'S HALF-YEARLY MEETING CONCLUDES — SUB-COMMITTEES TO ACCELERATE OFFICIAL LANGUAGE IMPLEMENTATION

The Cliff News • Bhopal

The first half-yearly meeting of Town Official Language Implementation Committee (TOLIC) No. 1, Bhopal for the year 2025 was successfully held at the National Institute of Technical Teachers Training and Research (NITTTR), Bhopal. The meeting was attended by around 80 representatives, including heads and Official Language Officers from nearly 55 member offices located in Bhopal.

Review of official language work in TOLIC meeting; announcement of sub-committees and Hindi workshops; Shri Narendra Singh Mehra and Prof. C.C. Tripathi delivered inspiring messages.

Review of Progress in Official Language Work

The meeting was chaired by Deputy Director of Official Language, Shri Narendra Singh Mehra, who reviewed the activities related to the implementation of Hindi in the past six months. Several important decisions were taken to further strengthen the official language framework in government offices.

"Review Should Inspire, Not Criticize" -Prof. C.C. Tripathi

Prof. C.C. Tripathi, Director of the Institute and Chairman of TOLIC, praised the consistent efforts of all member offices. He emphasized that reviews should not merely highlight shortcomings but serve as inspiration to achieve excellence.

He called upon all members to actively participate in promoting the use of Hindi in official work.

Distinguished Participants

The meeting was graced by the presence of Prof. Amitabh Pandey, Director of the Indira Gandhi Rashtriya Manav Sangrahalaya, Major Nishant Ojha, Official Language Officer at NITTTR, Mr. Ashish Potnis from Doordarshan Bhopal, Mr. Bharat Bhushan Deshmukh from IISER Bhopal, and several other dignitaries.

Sub-Committees to Enhance Language Efficiency

Shri Mehra proposed the formation of sub-committees within member offices to ensure that official language work is conducted in a more organized and effective manner. He also announced incentive awards for offices performing exceptionally well in promoting the use of Hindi.

Hindi Workshops to Continue Throughout the Year

He informed that a special training workshop on the quarterly progress report format will be organized in the upcoming month of August, which will assist offices in preparing accurate and timely reports.

Programme Coordination

The event was efficiently coordinated and conducted by TOLIC Secretary Shri Sanjay Tripathi. This TOLIC meeting has charted a new course for the promotion of Hindi as an official language. With the formation of sub-committees and regular training programs, the use of Hindi in government offices is expected to become more structured and widespread in the coming months.

समाचार पत्रों में संस्थान की गतिविधियाँ

शिक्षकों के लिए पंचकोशी शिक्षा पर एनआईटीटीटीआर भोपाल में विशेष व्याख्यान का आयोजन

शिक्षण प्रक्रिया को केवल ज्ञान-केन्द्रित न रखकर जीवन-केन्द्रित बनाना है: अवनीश भटनागर

स्वदेश ज्योति संवाददाता.भोपाल

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (निटर), भोपाल में बुधवार को शिक्षकों के लिए पंचकोशी शिक्षा विषय पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री अवनीश भटनागर, अखिल भारतीय उपाध्यक्ष, विद्या भारती थे।

उन्होंने भारतीय शिक्षा दर्शन में वर्णित पंचकोशीय अवधारणा को विस्तार से प्रस्तुत करते हुए बताया कि कैसे एक देना नहीं, बल्कि एक समग्र व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया है। उन्होंने बताया कि पंचकोशी शिक्षा में पाँच स्तर शामिल हैं: अन्नमय कोश शारीरिक स्वास्थ्य और अनुशासन, प्राणमय कोश ऊर्जा और जीवन शक्ति का विकास, मनोमय कोश भावनात्मक संतुलन और विचार शुद्धि, विज्ञानमय कोश विवेक, बुद्धि और निर्णय क्षमता,

विद्यार्थियों के लिए आदर्श बन सकते हैं। उन्होंने यह भी बल दिया कि आज की शिक्षा प्रणाली में इन कोशों पर आधारित प्रशिक्षण की अत्यंत आवश्यकता है, ताकि शिक्षण प्रक्रिया को केवल ज्ञान-केन्द्रित न रखकर जीवन-केन्द्रित बनाया जा सके। दुनिया में ट्रेड का ग्लोबलाइजेशन होता है लेकिन भारत वसुधेव कुटुंबकम के विचार का ग्लोबलाइजेशन करता है द्य संस्थान के निदेशक ने डॉ. भटनागर का आभार प्रकट किया और कहा कि संस्थान भविष्य में पंचकोशी शिक्षा पद्धति को शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का हिस्सा बनाने की दिशा में कार्य करेगा। कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. पीके पुरोहित ने कहा कि यह व्याख्यान न केवल एक शैक्षणिक संवाद था, बल्कि शिक्षकों के स्व-विकास और आंतरिक चेतना के जागरण का माध्यम भी बना। यह दृष्टिकोण आज के शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य में अत्यंत

निटर में दिन-रात लहरा रहा 100 फीट ऊंचा राष्ट्रीय ध्वज

भोपाल । राजधानी स्थित एनआईटीटीटीआर (निटर) में 100 फीट ऊंचा राष्ट्रीय ध्वज दिन-रात लहरा रहा है। संस्थान में लगी हुई

लाइट्स भी तिरंगे के रंग की हैं। संस्थान के निदेशक प्रो. सी सी त्रिपाठी ने कहा कि यह केवल एक ध्वज नहीं, बल्कि हमारे राष्ट्रीय मूल्यों, एकता और सांस्कृतिक विरासत का जीवंत प्रतीक है। हमें गर्व है कि एनआईटीटीटीआर भोपाल दिन-रात राष्ट्रभक्ति के रंग में रंगा रहता है। उन्होंने निटर परिवार से हर घर तिरंगा अभियान में सक्रिय भागीदारी और सोशल मीडिया प्रोफाइल पर तिरंगा लगाने का आह्वान किया। संस्थान के लिए यह एक बड़ी उपलब्धि है कि 100 फीट ऊंचा राष्ट्रीय ध्वज तथा तिरंगे के रंगों में रंगा कैंपस राष्ट्रीय ही नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय प्रतिभागियों को भी अपनी ओर आकर्षित करता है। निटर भोपाल के डीन कार्पोरेट एंड इंटरनेशनल रिलेशन्स प्रो पीके पुरोहित के अनुसार संस्थान का यह राष्ट्रीय ध्वज स्मार्ट रोड पर फोटो लेने का प्रमुख स्थल बन गया है।

स्किल डवलपमेंट के लिए प्रोसेस पर फोकस जरूरी

भोपाल। राजधानी स्थित एनआईटीटीटीआर (निटर)और जबलपुर इंजीनियरिंग कॉलेज के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर हुए। इस समझौते का उद्देश्य तकनीकी शिक्षा क्षेत्र में संयुक्त अनुसंधान, प्रशिक्षण, अकादमिक सहयोग, नवाचार, एवं विभिन्न तकनीकी पहलुओं को बढ़ावा देना है, जिससे दोनों संस्थानों के कर्मचारियों, शिक्षकों और विद्यार्थियों को नए अवसर प्राप्त होंगे। इस अवसर पर निटर के निदेशक प्रो. सीसी त्रिपाठी

स्वदेशी ही समृद्धि का आधार : कृष्णा गौर

भोपाल (काप्र)।

पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री श्रीमती कृष्णा गौर ने कहा कि स्वदेशी से स्वावलंबन और स्वावलंबन से सशक्त भारत बनता है।

यह बात रविवार को राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षण प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान में आयोजित दो दिवसीय स्वदेशी सुरक्षा एवं स्वावलंबन अभियान के अखिल भारतीय महिला प्रशिक्षण के समापन कार्यक्रम में कहीं। श्रीमती गौर ने कहा कि आत्मनिर्भर भारत को गढ़ने में महिलाओं की सहभागिता देश के उज्जवल भविष्य का प्रमाण हैं। उन्होंने कहा कि हमारे देश में स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आज तक महिलाओं ने हमेशा निर्णायक भूमिका निभाई है। उन्होंने देश के विभिन्न राज्यों से आयी 124 प्रतिभागी महिलाओं को संबोधित करते हुए स्वदेशी विचारधारा, आत्मनिर्भर भारत के संकल्प और महिला सशक्तिकरण पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने कहा कि स्वदेशी मूल्यों पर आधारित यह अभियान न केवल महिला शक्ति को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण है, बल्कि राष्ट्र निर्माण में हमारी सक्रिय भूमिका को भी सुदृढ़ करता है। हर घर में स्वदेशी का आहवान आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। इस अवसर पर राष्ट्रीय संगठक स्वदेशी जागरण मंच कश्मीरी लाल, अखिल भारतीय महिला प्रमुख स्वदेशी जागरण मंच श्रीमती अर्चना मीना, निदेशक एनआईटीटीआर प्रो. चंद्रचारु त्रिपाठी, डॉ. प्रतिभा चतुर्वेदी, डॉ. रश्मि विजय सहित कई पदाधिकारी एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

निटर में 'राजभाषा संवाद 2025' का आयोजन

सम्पूर्ण संस्कृति हिन्दी के साथ ही जीवित रह सकती है: डॉ. शुक्ल

हरिभूमि न्यूज ▸▸ भोपाल

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (निटर) द्वारा एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला "राजभाषा संवाद 2025" का आयोजन संस्थान परिसर में हुआ। इस कार्यशाला का उद्देश्य राजभाषा हिंदी के संवर्धन, संसदीय प्रक्रिया में उसके उपयोग तथा वैश्विक पटल पर हिंदी की भूमिका पर गंभीर मंथन करना था। मुख्य अतिथि डॉ. रवीन्द्र शुक्ल, पूर्व शिक्षा एवं कृषि मंत्री, उत्तर प्रदेश ने अपने वक्तव्य में कहा कि सम्पूर्ण संस्कृति हिन्दी के साथ ही जीवित रह सकती है।

प्रथम सत्र में देवी प्रसाद मिश्र, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, विश्व हिंदी परिषद ने संसदीय प्रश्नावली,

उत्तर एवं प्रक्रिया विषय पर विस्तृत व्याख्यान दिया। साहित्य अकादमी के निदेशक विकास दवे ने कहा कि यदि हम डिजिटल माध्यमों और वैश्विक मंचों पर हिंदी को सशक्त रूप से प्रस्तुत करें, तो यह निश्चय ही एक विश्वभाषा बन सकती है। संस्थान निदेशक व नराकास अध्यक्ष प्रो. सीसी त्रिपाठी के कहा कि राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता और सक्रियता ही इसे सशक्त बना सकती है।

एनआईटीटीटीआर में भारतीय ज्ञान परंपरा पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

भोपाल (काप्र) ।

उच्च शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश के शासकीय महाविद्यालयों में पदस्थ ... हुए कहा कि शिक्षा केवल सूचना का आदान-प्रदान नहीं, बल्कि एक समग्र व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया है। उन्होंने कहा कि शिक्षक का उद्देश्य जीवन मूल्यों

एनआईटीटीटीआर और आईआईएसईआर में एमओयू

शोध, रोजगार और नवाचार की नई पहल

भोपाल, 12 सितंबर. राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (एनआईटीटीटीआर), भोपाल और भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (आईआईएसईआर), भोपाल ने सेमीकंडक्टर स्किलिंग और

एनआईटीटीटीआर और आईआईएसईआर में एमओयू

शोध, रोजगार और नवाचार की नई पहल

भोपाल, 12 सितंबर. राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (एनआईटीटीटीआर), भोपाल और भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (आईआईएसईआर), भोपाल ने सेमीकंडक्टर स्किलिंग और अनुसंधान के क्षेत्र में सहयोग के लिए एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए.

इस एमओयू पर एनआईटीटीटीआर भोपाल के निदेशक प्रो. सी. सी. त्रिपाठी और आईआईएसईआर भोपाल के निदेशक प्रो. गोवर्धन दास ने औपचारिक रूप से हस्ताक्षर किए. समझौते का उद्देश्य अनुसंधान, नवाचार, कौशल विकास और संयुक्त प्रयासों के माध्यम से देश को तकनीकी रूप से और सशक्त बनाना है. एनआईटीटीटीआर भोपाल के निदेशक प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि दोनों संस्थान मिलकर सेमीकंडक्टर डिवाइस की असेंबली और पैकेजिंग के क्षेत्र में कार्य करेंगे. आईआईएसईआर भोपाल के निदेशक प्रो. गोवर्धन दास ने कहा कि आज अनुसंधान की सार्थकता तभी है जब यह राष्ट्र की वास्तविक आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं पर आधारित हो. एकेडेमिक संस्थानों का असली उद्देश्य तभी पूरा होता है जब वे अपने विद्यार्थियों को आवश्यक दक्षताओं से लैस करके उन्हें रोजगार योग्य बनाएं.

सही आचरण ही समाज को संगठित रखेगा : डॉ . द्विवेदी

▸ एनआईटीटीटीआर में भारतीय ज्ञान परंपरा पर व्याख्यान

भोपाल, 1 सितंबर. एनआईटीटीटीआर भोपाल में उच्च शिक्षा विभाग मध्य प्रदेश के शासकीय महाविद्यालयों में पदस्थ प्राध्यापकों के लिए भारतीय ज्ञान परम्परा पर चल रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों की श्रृंखला में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया.

इस व्याख्यान के मुख्य वक्ता डॉ. अवनीश भटनागर, डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी डॉ. उत्तम द्विवेदी थे. कार्यक्रम के मुख्य वक्ता अवनीश भटनागर, अखिल भारतीय उपाध्यक्ष विद्या भारती थे. उन्होंने भारत... अवधारणा को प्रस्तुत करते हुए बताया कि शिक्षा केवल सूचना देना नहीं, बल्कि एक समग्र व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया है. भटनागर ने शिक्षकों को टीचिंग के मूलमंत्र भी दिए. दूसरे वक्त प्रो ललित बिहारी गोस्वामी ने कहा कि जो मल है वही मल्यवान है. साक्षात्कार की विशेषता हमेशा से रही है. ज्ञान अहंकार दे सकता हे लेकिन विद्या विनय देती है.

उन्होंने कहा कि शिक्षक क्लास में शंका लेकर नहीं जिज्ञासा लेकर जाएँ. प्रो उत्तम द्विवेदी ने कहा कि हमें अपनी जड़ों से जुड़े रहना है. सही आचरण ही समाज

निटर भोपाल के निदेशक डॉ. सी.सी त्रिपाठी ने कहा कि मूल्य-आधारित, समग्र एवं भारतीय दृष्टिकोण युक्त शिक्षा को वैज्ञानिक तथ्यों के साथ समकालीन रूप से प्रासंगिक बनाना हमारी जिम्मेदारी है. डीन साइंस एवं आईकेएस हेड प्रो. पी.के पुरोहित ने कहा कि यह पहल न केवल भारत की समृद्ध धरोहर को पुनर्स्थापित करने का प्रयास है, बल्कि राष्ट्रगौरव को जागृत करने का एक सशक्त सांस्कृतिक संदेश भी है.इस अवसर पर संकाय सदस्य एवं विभिन्न प्रशिक्षणरत प्रतिभागी उपस्थित रहे. कार्यक्रम का

साहित्यकारों को पुस्तकालयों में होना चाहिए, संग्रहालयों में नहीं: द्विवेदी

हरिभूमि न्यूज ⏭ भोपाल

राजधानी स्थित राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (एनआईटीटीटीआर) में 10 से 26 सितंबर तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया। इसमें विभिन्न प्रतियोगिताओं और गतिविधियों के माध्यम से हिंदी भाषा के महत्व को रेखांकित किया गया। इस आयोजन में हिंदी कार्यशाला, निबंध प्रतियोगिता, चित्र देखो कहानी लिखो, स्वरचित आशु-कविता प्रतियोगिता, श्रुत-लेख प्रतियोगिता, कॉसवर्ड प्रतियोगिता, हास्य कविता, तात्कालिक भाषण, और प्रश्न मंच जैसी गतिविधियां शामिल थीं। समारोह के मुख्य अतिथि कवि और साहित्यकार संदीप द्विवेदी रहे।

अध्यक्षता संस्थान के निदेशक और नराकास के अध्यक्ष प्रो. चंद्र चारु त्रिपाठी ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में वंदना त्रिपाठी उपस्थित रहीं। आमतौर पर तकनीकी संस्थानों से हिंदी में कार्यों की अपेक्षा कम होती है। साहित्यकारों को पुस्तकालयों में होना चाहिए, संग्रहालयों में नहीं। संस्थान निदेशक प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि यह हमारे देश की आत्मा और संस्कृति की अभिव्यक्ति है।

शिक्षा के साथ उद्यमिता जरूरी, युवाओं को आत्मनिर्भर बनाएगा: डॉ. भटनागर

भोपाल। एनआईटीटीटीआर में आयोजित विशेष ओरिएंटेशन कार्यक्रम में वरिष्ठ शिक्षाविद् एवं विद्याभारती के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. अवनीश भटनागर ने युवाओं को शिक्षा के साथ उद्यमिता कौशल विकसित करने की सलाह दी।

उन्होंने कहा कि केवल डिग्री हासिल करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि आत्मनिर्भर बनने के लिए व्यावसायिक और व्यक्तिगत कौशल भी जरूरी हैं। डॉ. भटनागर ने बताया कि स्व-रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं और छात्रों को इन्हें पहचान कर अपने उद्यमिता कौशल को निखारना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि शैक्षिक यात्रा के साथ व्यावसायिक विकास भी जरूरी है, जिससे युवा समाज में सकारात्मक योगदान कर सकें।

एनआईटीटीटीआर के निदेशक प्रो. सीसी त्रिपाठी ने कहा कि संस्थान का लक्ष्य न केवल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है, बल्कि विद्यार्थियों को स्वावलंबी और समाज के लिए उपयोगी बनाना भी है।

डीन अकादमिक प्रो. संजय अग्रवाल ने ओरिएंटेशन के दौरान छात्रों को संस्थान की नीतियों, शोध केंद्रों और संसाधनों से परिचित कराया। कार्यक्रम में छात्रों को लाइब्रेरी, हाई-टेक लैब्स और शोध केंद्रों का भ्रमण भी कराया गया। इस अवसर पर संस्थान के अन्य वरिष्ठ सदस्य भी उपस्थित थे।

जुलाई माह की झलकियाँ

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल
National Institute of Technical Teachers' Training and Research, Bhopal
Expert Lecture on
Samvidhan Hatya Varsh

जुलाई माह की झलकियाँ

1st July 2025
Expert
Dr. Ashok Kadel
राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल
National Institute of Technical Teachers' Training and Research, Bhopal
NITTTR Bhopal - SIEMENS - Center of Excellence
Digitization & Industry 4.0
एन.आई.टी.टी.टी.आर. भोपाल

अगस्त माह की झलकियाँ

अगस्त माह की झलकियाँ

सितम्बर माह की झलकियाँ

सितम्बर माह की झलकियाँ